

तंत्री तथा संपादक :
दीपक देसाई
वर्ष: २, अंक : ४
अखंड क्रमांक : १६
फरवरी २००७

संपर्क सूत्र :

त्रिमंदिर, सीमंधर सीटी,
अहमदाबाद-कलोल हाई वे,
पो.ओ. : अडालज,
जि. : गांधीनगर-३८२४२१
फोन : (०७९)३९८३०१००
e-mail :

dadavani@dadabhagwan.org

अहमदाबाद : (०७९)
२७५४०४०८, २७५४३९७९

मुंबई : (०२२) २४१३७६१६

सुरत : (०२६१) २५४४९६४

राजकोट : (०२८१) २४६८८३०

U.S.A. : 785-271-0869

U.K.: 020-8204-0746

Website : www.dadashri.org
www.dadabhagwan.org

Publisher, Owner & Printed by :

Deepak Desai on behalf of
Mahavideh Foundation
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

Printer/Press :

Mahavideh Foundation
Basement, Parshvanath
Chambers, Nr.RBI,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

सबरिक्खण (सदस्यता फी)

१५ साल का

भारत : ८०० रूपया

यु.एस.ए. : १०० डॉलर

यु.के. : ७५ पाउन्ड

वार्षिक

भारत : १०० रूपया

यु.एस.ए. : 10 डॉलर

यु.के. : 7 पाउन्ड

भारत में D.D. / M.O.

‘महाविदेह फाउन्डेशन’ के
नाम से भेजे।

दादावाणी

मौन धारण के परिणाम

संपादकीय

संसार व्यवहार में बातचीत किये बगैर छुटकारा नहीं है। पर बातचीत में जहाँ कहीं आग्रह, अपेक्षा, अभिप्राय हो जाता है वहाँ पर टकराव हो जाता है। फिर एक बार उलझन पैदा होने पर, उसे बातचीत के द्वारा सुलझाने का प्रयत्न करने पर बात और उलझती है। जहाँ ऐसी दुविधा खड़ी हो जाये वहाँ क्या उपाय करना? समझकर मौन धारण करना। भीतर कौन सी समझ का समायोजन करना? सामनेवाला जो कुछ उलटा व्यवहार करता है, वह हमारी भूल का दंड देने का निमित्त है। इसलिये उसका क्या दोष? हमारा हिसाब चुकता हो रहा है। उस समय भुगतता कौन है? जो भुगत रहा है उसकी भूल। ऐसे ज्ञान की यथार्थ समझ भीतर में हाजिर रखें और सामनेवाले व्यक्ति के साथ मौन धारण करें तो धीरे-धीरे हिसाब चुकता होकर व्यवहार का अंत आता है।

जब बुद्धि न्याय खोजने जाती है, तब से बखेड़ा शुरू होता है। ‘ऐसा नहीं करने पर क्या होगा? यदि ऐसे प्रत्युत्तर दिया तभी सुधरेगा।’ इस प्रकार बुद्धि, तरह-तरह की समस्याएँ खड़ी करके बखेड़ा किया करें और इमोशनल करवा दें। और आखिर शब्दों में बोलकर व्यवहार बिगाड़ दे। यहाँ परम पूज्य दादाश्री कहते हैं कि, ‘जितना मौन में रहोगे उतनी बुद्धि बंद होगी और बुद्धि के दरवाजे बंद होने पर मोक्ष की तैयारी होती है। बुद्धि को लेकर संसार है। जिसकी बुद्धि खतम हो रही है, उनका संसार विलय हुआ करता है।’ स्थूल मौन धारण से जागृति रहती है, और ज्ञाता-द्रष्टा पद में रहने पर शक्ति बढ़ती जाती है।

परम पूज्य दादाश्री ने मौन शब्द का प्रयोग दो जगहों पर (अलग अलग अर्थ में) किया है। एक तो सामनेवाली व्यक्ति के संदर्भ में बखेड़े के उपाय हेतु स्थूल वाणी नहीं बोलना यानी मौन धारण करना। और दूसरा, प्रज्ञा शक्ति और अहंकार के बिच जुदापन की जागृति रखने हेतु बातचीत का प्रयोग समायोजित करना। ‘चंदुभाई’ के साथ बातचीत करें तब खुद चंदुभाई से जुदा हैं, उसे जागृति रही कहलायें। ‘चंदुभाई’ के साथ बातचीत नहीं करें, मौन रहे तो चंदुभाई में तन्मयाकार हैं, उसे अजागृति कही, वह उपयोग चूकें कहलाये। इससे कर्म पेन्डिंग रहता है, अगले जनम की बाकी जमा राशि के तौर पर।

प्रस्तुत संकलन में महात्माओं के लिये व्यावहारिक दुविधाओं को सुलझाने की व्यावहारिक चाबियाँ, मौन के अलग अलग स्वरूप की सूक्ष्म समझ और साथ-साथ आंतरिक जागृति की प्रगति हेतु ज्ञान की चाबियाँ, परम पूज्य दादाश्री की अनुभव ज्ञान वाणी में संकलित हुई हैं। जो ज्ञानदशा की प्रगति हेतु सहायक सिद्ध होंगी।

दीपक देसाई □

पाठकों से...

‘दादावाणी’ सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलतः गुजराती ‘दादावाणी’ का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिये गये शब्द या तो अंग्रेजी शब्द का अर्थ है अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किये गये वाक्यांश है। यहाँ पर ‘आत्मा’ शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। पाठक जहाँ पर भी चंदुभाई नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर खुद को समझें। ‘दादावाणी’ के इस अंक में अगर कोई बात आप समझ न पायें तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधार कर समाधान प्राप्त करें। भाषांतर में कोई कमी नजर आये तो हमें सूचित करने की कृपा करें। ऐसी क्षतियों के लिये हम आपके क्षमाप्रार्थी हैं।

मौन धारण के परिणाम

गुत्थियाँ सुलझाने मौन धारण

इस ज्ञान प्राप्ति के पश्चात यह जगत् ‘व्यवस्थित’ (सायन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडन्स) है। इसलिये ‘व्यवस्थित शक्ति’ हमारी जो गुनहगारी थी, उसे वापस हमारे पास भेजती है। उसे आने देना और खुद अपने समता भाव में रहकर उसका निपटारा कर देना। पिछले अवतार में जो-जो भूलें की थीं, वे इस अवतार में सामने आती हैं। इसलिये इस अवतार में हमारे सीधे चलने के बावजूद भी वह भूल बाधा रूप होगी, उसका नाम गुनहगारी!

यह गुनहगारी दो प्रकार से हैं। हमें फूल चढ़ायें वह भी गुनहगारी और पत्थर मारे वह भी गुनहगारी। फूल चढ़ें वह पुण्य की गुनहगारी और पत्थर मारें वह पाप की गुनहगारी। यह कैसे? पहले जो भूलें की थी उसका कोर्ट में मुकदमा चले और फिर न्याय होता है। जो-जो भूलें की थी, उनके गुनाह भुगतना पड़े। उन भूलों के परिणाम भुगतने ही पड़ें। उन भूलों का हम समता भाव से निपटारा करें, उसमें कुछ भी बोले नहीं। नहीं बोलने पर क्या होता है? समय पर भूलें सामने आयेगी और भुगतान होकर निकल जायेगी। ऊँचे घरानों में बोलने से ही सारी गुत्थियाँ पड़ी हुई हैं न! इसलिये उन गुत्थियों को सुलझाने के लिये मौन रखने पर ही निपटारा हो सकता है।

‘ज्ञानी पुरुष’ ने उलझनें नहीं की थी, इसलिये आज उनको आगे-आगे सारा वैभव प्राप्त होता रहे, और आप सभी को आज इस अवतार में ‘ज्ञानी पुरुष’

मिल गये हैं। मतलब पिछली उलझनों का समता भाव से निपटारा करके अब नई उलझनें पैदा मत करना, तो फिर वे उलझने आपका रास्ता नहीं रोकेगी और हल निकल आयेगा। मतलब हमें भूलों को तो सुधारना ही पड़ेगा न?

प्रश्नकर्ता : मगर क्या-क्या भूलें हैं, वे सारी नजर तो आनी चाहिए न?

दादाश्री : वह तो आहिस्ता-आहिस्ता दिखाई देगी। आपको जैसे-जैसे यह बात बताऊँगा, वैसे-वैसे दिखाई देगी। आपकी भूल देखने की दृष्टि उत्पन्न होगी। आपकी जब इच्छा होगी कि मुझे अब भूलों को खोज निकालना है, तब वे भूलें मिले बगैर नहीं रहेगी।

अब आपके जो उदय है न, उदय में जो दोष हैं, वह रिझर्वोयर (सरोवर) का माल है। इसलिये उसमें नई आवक नहीं है और जावक चालू है। मतलब पहले जावक जोरों से होती है, फिर दो-पाँच सालों में जब माल खाली हो जायेगा तब आवाज़ देने पर भी नहीं आनेवाला और कुछ सालों के बाद तो आपकी दशा ओर ही होगी!

और इसलिये हमने (इस आदतों से) सेफसाइड कर दिया है। आपके लक्ष में यह रहना चाहिए कि जो सेफसाइड किया है वह याद नहीं आना चाहिए। सुटेव (अच्छी आदतें) और कुटेव (बुरी आदतें) दोनों को हमने सेफसाइड नहीं किया है क्या?

प्रश्नकर्ता : हाँ जी।

दादावाणी

दादाश्री : फिर कहेगा, 'दादाजी, मुझे ऐसा क्यों होता है? आज गुस्सा हो गया था।' अरे, गुस्सा हो गया तो उसे देखा कर न? तू ने जाना है न? पहले जानते नहीं थे, पहले तो 'मैं ने ही किया' ऐसा कहते थे। मतलब अब अलग हो गया न?

प्रश्नकर्ता : हाँ जी।

आखिर मौन ही होना है, वर्ना...

प्रश्नकर्ता : संसार ही ऐसी वस्तु है कि जहाँ पर निरे अंतराय ही हैं।

दादाश्री : आप खुद परमात्मा हैं, पर उस पद का लाभ नहीं मिलता, क्योंकि निरे अंतराय हैं। 'मैं चंदुभाई हूँ' बोलते ही अंतराय पड़ते हैं। क्योंकि तब भगवान कहते हैं कि 'तू मुझे चंदु कहता है?', ऐसा अनजाने में बोलने पर भी अंतराय पड़ता है। अनजाने में अंगारों में हाथ डालने पर क्या वे छोड़ देंगे?

दखलंदाजी ही अंतराय है। आप परमात्मा हैं और परमात्मा के कौन-से अंतराय होते हैं? पर यह तो दखलंदाजी करें कि, 'ये ऐसा क्यों किया? अरे! ऐसा कर' मगर ऐसा क्यों करते हैं?

प्रश्नकर्ता : मतलब मौन हो जायें तो बेहतर?

दादाश्री : मौन ही होना है। वाणी तो बोलना ही नहीं। इस काल की वाणी तो पगली है। बोलते ही पागलपन प्रगट हो जाये।

प्रश्नकर्ता : तब तो बोलना ही चाहिए न? प्रगट हो जाये वह तो अच्छा है न?

दादाश्री : नहीं, वह गलत कहलाये। इसमें बोलने जैसा कुछ रहता ही नहीं है। यह 'ज्ञान' ही ऐसा प्रकाशमय है कि बोलने की ज़रूरत ही नहीं रहती।

प्रश्नकर्ता : पर वातावरण ही ऐसा है कि कभी ऐसा बोल देते हैं।

दादाश्री : बोला जाये, तो हम कहें (खुद चंदुभाई को कहें) कि 'इस चंदुभाई का दिमाग ज़रा ऐसा टेढ़ा है।' हम चंदुभाई के बारे में उलटा-सीधा बोला करें। चंदुभाई से लगाव तो नहीं रहा है न आपको कि बहुत प्यारे लगते हैं?

प्रश्नकर्ता : नहीं जी।

दादाश्री : तब फिर हकीकत बता देना। 'चंदुभाई' 'आप' से अलग हैं इस प्रकार आप बात करना।

प्रश्नकर्ता : 'चंदुभाई' का हथियार उठाना ही नहीं है, ऐसी बात है न?

दादाश्री : बस, वही ठीक है। हथियार नहीं उठाना। अनंत अवतारों से हथियार धारण करके पराये का रक्षण किया है।

जरूरत से ज्यादा बोले उतना पागलपन लगे न? कभी ऐसा पागलपन प्रगट हो जाये, तो आप भी कह देना कि, 'यह चंदुभाई बोलते हैं न, मेरी उनसे पहचान है। ज़रा तुनक मिजाज हैं।' ऐसा कहना। मैं अपने भतीजे से कहा करता था कि, 'चाचाजी शुरू से ही ऐसे थे, यह आज की बात नहीं है।' तब वह कहे कि, 'आप ऐसा क्यों कहते हैं?' 'आप' और 'चाचाजी' दोनों अलग हैं, यह उसकी समझ में नहीं आता न?

अब आपको तो पता चल जाये न कि 'चंदुभाई' उलटा बोले? आप तो ज्यादा जागृत हैं।

प्रश्नकर्ता : जी हाँ, पता चल जाये।

दादाश्री : और आप दो-चार बार ऐसा बोलेंगे न, तो सामनेवाला भी खुद को 'टेढ़ा है' ऐसा खुद कहेगा। पर आप उसे ऐसा कहें कि, 'आप गलत हैं,' तो वह आपको दबोचेगा। इसलिये औरों को गलत कहना छोड़ दीजिये और किसी को गलत कहना ही नहीं चाहिए। यह तो हमारी मूर्खता है। किसी को

दादावाणी

गलत कहना, ब्लेम (आक्षेप) करना, ऐसा बोलना यह हमारी फूलिशनेस (मूर्खता) है।

बंद करें बुद्धि के दरवाजे, मौन से

जितना मौन पकड़ेंगे उतनी बुद्धि बंद होगी। बुद्धि बंद होने पर मौन होता है। मतलब यह सब जो वाणी बोलते हैं, वह बुद्धि बुलवाती है। बुद्धि और अहंकार, दोनों मिलकर वाणी बुलवाते हैं। और मौन होने के बाद सब (अपने-अपने घर) लौट जायेंगे।

जब बुद्धि के दरवाजे बंद होंगे तब मोक्ष की तैयारी होगी। बुद्धि को लेकर संसार है। जिनको बुद्धि नहीं है, उनका संसार विलय हुआ करता है। इन जानवरों आदि को बुद्धि नहीं होती, (डिस्चार्ज) अहंकार होता है। बुद्धि नहीं, इसलिये संसार विलय होता रहे, निरंतर विलय ही होता रहे। नर्कगति के जीवों को विलय होता रहे, जानवरों को विलय होता रहे, देवता लोगों को विलय होता रहे, क्योंकि बुद्धि नहीं है न? और यह मनुष्य तो बुद्धि की दखलवाले लोग, पुण्यवंत लोग (!)

प्रश्नकर्ता : बुद्धि की बड़ी दखल रहा करती है, कि ऐसा हो जायेगा, वैसा हो जायेगा। यह बुद्धि की दखलें सारा दिन बहुत चलती रहती हैं।

दादाश्री : हाँ, 'क्या हो जायेगा? यह कारखाना अपने आप अच्छी तरह से चलता है, घाटा नहीं आता है, भाई सभी जीवित हैं, और क्या हो जायेगा? कुछ भी होनेवाला नहीं है,' कहना।

प्रश्नकर्ता : यह बात करेक्ट है दादाजी, फिर भी बुद्धि अपना रंग दिखाती है। तिल का ताड़ खड़ा कर देती है।

दादाश्री : हाँ, वह खड़ा कर देगी, तब फिर हम क्या करें उसका? बुद्धि से भाईचारा करेंगे?

प्रश्नकर्ता : क्या उसको उड़ा दे?

दादाश्री : हाँ, उड़ा देना। 'ऐसा जवान आदमी

है तू।' 'मंदी आयेगी तब क्या होगा? क्या होगा?' अरे, क्या होनेवाला है? दुनिया वैसी की वैसी रही है। क्या हो जानेवाला है? हम जीवित के जीवित ही रहते हैं। एक स्टीमर इंग्लैंड से निकलकर यहाँ तक क्षेम-कुशल आ पहुँचता है और यदि रास्ते में तीन बार हिलने-डुलने पर, क्या होगा? क्या होगा? होने लगे। अरे मुए, अभी किनारे पर जा पहुँचेगा वह तो। खा-पीकर, नाश्ता करके भगवान का नाम ले। स्टीमर समंदर में जायेगा कि नहीं जायेगा? अब उस समय क्या होगा? क्या होगा? क्या होगा? ऐसा कौन दिखाता है? यह बुद्धि अकुलाती है। बुद्धि परेशान करती है। क्या हो जायेगा? क्या हो जायेगा? अरे, क्या हो जानेवाला है? दो बातें होगी, या तो डूब जायेगा या फिर तैरता रहेगा। दो ही बात होंगी। इसलिये भगवान का नाम लिया कर न चूपचाप। दो के सिवा तीसरा कुछ होता है क्या कभी? और यदि डूबता है तो थोड़े रोज़ डूबनेवाला है? कभी-कभार डूबे।

इमोशनल होने पर मौन नहीं टिकता

प्रश्नकर्ता : (किसी भी संयोग दौरान) यह काम प्रज्ञा ने किया है कि बुद्धि ने किया है, इसका पता कैसे चले? बुद्धि और प्रज्ञा की क्या व्याख्या है? कुछ बात करने पर, 'बुद्धि लडाई, बुद्धि खड़ी हुई,' कहा जाता है, तो बुद्धि है क्या?

दादाश्री : जिससे बेकरारी हो जिससे वह बुद्धि, प्रज्ञा में बेकरारी नहीं होती। हमें ज़रा-सी भी भीतर में बेकरारी हो तो समझना कि बुद्धि का चलन है। आप बुद्धि इस्तेमाल नहीं करना चाहें तब भी बुद्धि इस्तेमाल हो ही जाती है। वही आप को चैन से बैठने नहीं देती। वह आप को इमोशनल करवाती है। उस बुद्धि से हम कहें कि, 'हे बुद्धि बहन! आप पीहर सिधारिये। अब आप से हमारा कोई लेना-देना नहीं है।' सूरज का उजाला होने के बाद मोमबत्ती की ज़रूरत रहती है क्या? मतलब आत्मा का प्रकाश होने के बाद बुद्धि के प्रकाश की ज़रूरत नहीं रहती। हमें

दादावाणी

(दादाजी को) बुद्धि नहीं होती, हम अबुध होते हैं।

प्रश्नकर्ता : तब फिर मौन रहना उसे बुद्धि नहीं दौड़ाई कहलाये क्या?

दादाश्री : मौन रखने से रहनेवाला नहीं है।

प्रश्नकर्ता : मगर किसी से मौन रहा जाये तब?

दादाश्री : कैसे रह पाये? बुद्धि 'इमोशनल' ही रखा करे। 'मोशन' में रखती ही नहीं। घड़ीभर के लिये भी आपको शांति से नहीं बैठने देगी। बुद्धि रात में दो बजे भी जगायेगी! देखिये उछल-कूद, उछल-कूद! चैन से आराम भी नहीं करने देगी।

प्रश्नकर्ता : ज्ञाता-द्रष्टा रहने पर ही बुद्धि का उपयोग नहीं होता?

दादाश्री : ज्ञाता-द्रष्टा रहने पर बुद्धि हर्ज नहीं करती। फिर तो बुद्धि इस्तेमाल ही कैसे होगी? फिर तो अंतिम स्टेशन आ जाये, पर बुद्धि ज्ञाता-द्रष्टा रहने नहीं देती न!

यदि आप सब्जी खरीदने मार्केट गये हों और दूसरी ओर आपको सत्संग में जाने की जल्दी हो तब भी वह बुद्धि आपको चार दुकानों पर घुमायेगी, तब जाकर छोड़ेगी, ऐसे बुद्धि इधर-उधर भटकती रहे।

प्रश्नकर्ता : जहाँ से जो मिला, पक्की भिंडी उठा लायें घर पे, मतलब बुद्धि नहीं लड़ाई, ऐसा क्या?

दादाश्री : आपको कैसे विश्वास है कि पक्की आयेगी कि कोमल आयेगी? कोई तो दुकान पर जाकर इतना ही कहें कि भिंडी तौल दीजिये और अच्छी भिंडी आये! और पक्की आने पर भी क्या बिगड़ गया? संसार में ऐसा तो चलता ही रहता है। रोजाना पक्की नहीं आती। कभी-कभार ही आती है। फिर उसकी (खानेवाले की) पुण्याई भी होती है। भले आदमी की सारी पुण्याई भली ही होती है

इसलिये आगे-आगे सब तैयार ही रहेता है। खटपट करनेवाले की ही सारी पुण्याई खटपटवाली होती है।

क्रोध करने के बजाय, मौन का हथियार

प्रश्नकर्ता : बुद्धिमान कौन कहलाये?

दादाश्री : जो खुद के घर में, धंधे में, हर कोई जगह में, कम से कम टकराव पैदा हो इस प्रकार से व्यवहार करता है, वह बुद्धिमान कहलाये।

बाकी, सामनेवाले को खुश रखने के लिये पंडिताई करे वह एक तरह का 'ऑवरवाइज़नेस' है। बुद्धि से सामनेवाले की मदद होनी चाहिए।

सुबह नाश्ते में चाय और मिठाई आई और हम मिठाई खाने के बाद चाय पीकर शोर मचायें कि चाय फीकी क्यों है? तब वह बुद्धिमान कैसे कहलाये? और शायद कभी चाय यों ही फीकी आई हो, तब भी हल्ला-गुल्ला क्यों करें? इतनी सी चाय के लिये हम यदि हल्ला-गुल्ला करें तो घरवाले बेचारे कितने फड़फड़ा जायें!

बुद्धिमान तो कब कहलायें, कि जब कोई मनुष्य हम से तनिक भी नहीं फड़फड़ाये, उस प्रकार बुद्धि प्रयोग में लायें। जहाँ कहीं भी कोई फड़फड़ाता है वहाँ कुबुद्धि है। उससे भयंकर पाप बँधते हैं। मतलब बुद्धि की भूमिका तो समझनी चाहिए न?

हमारे घर में किसी को हेल्प नहीं होती हो, मतभेद कम नहीं होते हों तो ऐसी बुद्धि किस काम की?

प्रश्नकर्ता : सही है।

दादाश्री : हम तो यहाँ स्पष्टता करने बैठे हैं। सही है, ऐसा कहलवाने के लिये नहीं।

प्रश्नकर्ता : किसी जगह, घर में या बाहर, कपट होता हो तो वहाँ उस व्यक्ति को फड़फड़ाना होगा न?

दादावाणी

दादाश्री : हमारे फड़फड़ाने से यदि सामनेवाले का कपट मीट जाता हो तो फड़फड़ाना चाहिए, पर यदि कपट बना रहता हो तो फड़फड़ाना कोई माने नहीं रखता। आपको फड़फड़ाना नहीं आता, इस इल्जाम के तहत आपको जेल में अंदर कर देना चाहिए कि, 'इनको क्यों फड़फड़ाया?'

प्रश्नकर्ता : फड़फड़ाना नहीं तो और क्या करना?

दादाश्री : वह किस राह सुधर सके यह देखना।

प्रश्नकर्ता : हमारे साथ यदि कोई कपट करता है तो स्वाभाविक रूप से उस पर गुस्सा तो आ ही जायेगा न?

दादाश्री : पाँच बार गुस्सा करने पर यदि उसका कपट चला जाता है तो सही है और अगर नहीं जाता, तो आपको अंदर कर देना चाहिए। इस दवाई से वह रोग मुक्त नहीं होता, उलटे ऐसी दवाई पिलाकर आप उसे मार डालते हैं?

प्रश्नकर्ता : वह आदमी उसी तरह चलता रहे, तब फिर उसका उपाय क्या करना?

दादाश्री : आपका यह उपाय नुकसानदेह है। ऐसा उपाय नहीं होता। यह तो एक तरह का 'इगोइज़्म (अहंकार)' है। 'मैं इसे ऐसे सुधारूँ, वैसे सुधारूँ' वह 'इगोइज़्म' है। हम क्या कहना चाहते हैं कि पहले तू सुधर जा। तू अकेला ही बिगड़ा हुआ है। वे तो सुधरे हुए ही हैं। सभी को फड़फड़ाकर परेशान कर डाला है, यह तुम्हें शोभा नहीं देता।

प्रश्नकर्ता : तब फिर क्या करना?

दादाश्री : खुद में परिवर्तन लाना है। खुद ऐसा बन जाये कि कोई कभी हमारे साथ कपट करे ही नहीं। मेरे साथ कोई कपट नहीं करता। अपने मन में कपट होने पर ही सामनेवाला कपट करेगा और

अपने मन में यदि कपट नहीं है तो कोई कपट करेगा ही नहीं। यह सारी हमारी ही फोटो है!

प्रश्नकर्ता : हमारा लेन-देन होगा इसलिये सामनेवाला कपट करता है?

दादाश्री : हिसाब को तो हम 'लेट गो' करते हैं। हिसाब का निवारण संभव नहीं है। हिसाब तो जो मुझे मिला, उसका भी निवारण नहीं हो सकता।

आप से कोई परिवर्तन होनेवाला नहीं है। यह शोर मचाने के माने ही क्या है? उसका पहले का कपट तो ज्यों का त्यों बना रहता है। उलटा वह उसे (कपट को) बढ़ाता रहता है। आपके शोर मचाने से वह मन में कहेगा कि इन में कोई बरकत तो है नहीं और बिना वजह शोर मचाता है। मतलब वह अपनी भूल बढ़ाता रहता है और आपको पी जाता है (आपको अनदेखा-अनसुना कर देता है)।

प्रश्नकर्ता : उसका क्या रास्ता निकालें?

दादाश्री : उस पर हमारा ऐसा प्रभाव हो कि वह कपट ही नहीं करे। हमें ये दूसरे रास्ते खोजने की जरूरत नहीं। गुस्सा करने के बजाय मौन रहिये न? गुस्सा यह हथियार नहीं है।

प्रश्नकर्ता : कपट करके कोई आदमी माल चुराता रहे और हम उसे देखा करें क्या?

दादाश्री : उसके लिये गुस्सा वह हथियार नहीं है। और कोई हथियार इस्तेमाल कीजिये न? उसे बिठाकर समझाइये, विचार करने को कहिये, तो सब ठिकाने पर आ जायेगा।

प्रश्नकर्ता : डॉक्टर ने उसे कहा है कि 'आपको ब्लड प्रेशर है', इसलिये उसे कुछ चीजें नहीं खानी चाहिए। फिर भी वे नहीं मानें और खायें तो मुझे डॉक्टर के पास दौड़ना पड़े न?

दादाश्री : मेरा कहना है कि डॉक्टर को ही 'ब्लड प्रेशर' हुआ है न?

दादावाणी

‘यह किस आधार पर खाते है?’ यह आप जानते नहीं हैं। हम तो एक बार कहकर देखें कि डॉक्टर ने मिर्च खाने को मना किया है। फिर यदि हमारा प्रभाव पड़ा तो सही और नहीं पड़ा तो भी सही। आपका भी प्रभाव नहीं पड़ता और डॉक्टर का भी प्रभाव नहीं पड़ता है।

प्रश्नकर्ता : हम मिर्च खाते रहें और दूसरों को मिर्च खाने से मना करें तो उसका प्रभाव नहीं पड़ता न?

दादाश्री : ऐसा मैं करवाता ही नहीं हूँ। मुझे जितना त्याग बरतता है उतना ही त्याग मैं आपसे करवाता हूँ और वह भी आपकी इच्छा होने पर ही, वर्ना मैं कहता हूँ कि ब्याह कर ले।

हम किच-किच करें कि अचार मत खाना, मिर्च मत खाना। मतलब वह मन में चिढ़ता रहे कि यह कहाँ से आ धमका सामने?

आपके मन में कभी ऐसा विचार आये कि ‘मैं नहीं होता तो क्या होता?’ तब बिना वजह ऐसा इगोइज़्म करने के बजाय ऐसा मान लीजिये कि ‘आप हैं ही नहीं’।

‘मिर्च मत खाना’ ऐसा डॉक्टर का ज्ञान हम हाजिर करें, मगर उसका स्वीकार करना या नहीं करना, यह उसकी मरज़ी की बात है।

मैं ने किसे से कहा हो कि, ‘ऐसा करना’। तब वह कुछ और ही करे। तब मैं उसे कहूँ कि, ‘ऐसा करने से क्या लाभ होगा?’ इस पर वह कहेगा कि, ‘अब से नहीं करूँगा’। यदि मैं ऐसा कहूँ कि, ‘तू ऐसा क्यों करता है? तू ऐसा है, तू वैसा है।’ तब वह छिपाएगा, ‘ऑपन’ (खुल्ला) नहीं करेगा।

प्रश्नकर्ता : ऐसी कुशलता कोई एकदम से थोड़े ही आती है?

दादाश्री : नहीं, वह तो सुनने में आया हो तो

कभी आ जाये। ज्ञान सुनने में आया हो तो काम में आये। यह मेरा तरिका आपको बताता हूँ कि कैसे करके मैं ‘जगत् जीत’ (जगज्जयी) हुआ हूँ। आखिरकार जगत् को जीतना तो होगा ही न?

समझाईये अथवा मौन रहिये

(संयोगरूपी) चलती गाडी में दखल मत देना, अपने आप चलती रहेगी। वह कहीं अटकने वाली नहीं है।

प्रश्नकर्ता : यह जो ‘इन्टरफियर’ (दखल) हुआ ऐसा कहते हैं, क्या दखल का मतबल यही है?

दादाश्री : ‘इन्टरफियर’ तो होना ही नहीं चाहिए। वह दखल ही कहलाये। दखल होने पर बखेड़ा हो जाये। जो चलता है उसे चलने देना पड़े। यह ट्रेन चलता हो, उसमें कुछ खटक खटक होता हो तो उसके लिये क्या हम जंजीर खींचकर हल्ला-गुल्ला मचायें? नहीं, उसे चलने ही देना।

प्रश्नकर्ता : यह तो जरा सा चूँ-चूँ होता हो तब भी नीचे ‘ऑईल’ डालने जायें?

दादाश्री : हाँ जायें, दखल देने की जरूरत नहीं है। क्या हो रहा है उसे ‘देखा’ करना। हम यदि कहीं दखल देते तो क्या गत होती हमारी? जो होता हो उसे चलने देना।

प्रश्नकर्ता : गलत होने पर भी चलने देना?

दादाश्री : सही या गलत आप क्या चलने देंगे? मनुष्यों में चलाने की शक्ति ही नहीं है। यह तो झूठा अहंकार करते हैं कि मैं गलत चलने नहीं दूँगा, इससे उलटे टंटे होते हैं, बखेड़े होते हैं। किसी से गलत हो रहा हो तो हम उसे समझाये, नहीं तो मौन रहें।

प्रश्नकर्ता : पर हमें अन्याय होता हो तब?

दादाश्री : अन्याय हुआ हो तो मार खाइये न

आराम से! और ऐसा नहीं करेंगे तो कहाँ जायेंगे? कॉर्ट में जाइये, वकील खोज निकालिये।

प्रश्नकर्ता : वकील लायें, मतलब दखलंदाजी कहलाये न?

दादाश्री : फिर वकील आपको झिड़कायेगा, 'बिना अक्ल के मूर्ख लोग, साढ़े दस बजे आते हैं? जल्दी क्यों नहीं आये?' ऐसे गालियाँ सुनायेगा। इसलिये बेहतर है सीधे होकर हम अपना झटपट निपटा लें।

दखल में उतरने जैसा नहीं है। यह काल विचित्र है। ठीक से बोलते मैं ने किसी को देखा ही नहीं है। वे ऐसा बोले कि हमें 'हेडेक' (सिरदर्द) होने लगे। क्या इसे भाषा कहेंगे?

प्रश्नकर्ता : तो इस हिसाब से, अच्छा कहना कि बुरा कहना दोनों ही दखलंदाजी हुई न?

दादाश्री : कुछ बोलना ही नहीं। कोई पूछे उतना ही जवाब देना। लंबी झंझट में नहीं उतरना। हमें क्या लेना-देना? इसका कोई अंत नहीं है।

जेब कटी, वहाँ मौन उपाय

कुदरत हमेशा न्यायी ही रही है। इस जगत् में क्षण भर के लिये भी कुदरत ने अन्याय नहीं किया है। इस कॉर्ट में अन्याय होवे पर कुदरत की कोर्ट में अन्याय नहीं होता। इसलिये आज बड़े लोग लूटते हैं वह बराबर है, लोग काला-बाजारी करते हैं वह भी बराबर है, काले-बाजारियों का बुरा हाल होगा यह भी बराबर है, उसका परिणाम ऐसा आयेगा वह भी बराबर है। मतलब कुदरत सभी नियमानुसार ही करती है, एक्जेक्ट कानून ही करती है, कानून के बाहर जाती नहीं है, यह कुदरत क्षणभर के लिये भी अन्यायी नहीं हुई है।

प्रश्नकर्ता : मतलब अभी जो भुगत रहे हैं वे बाद में पायेंगे ऐसा?

दादाश्री : ऐसा नहीं। भुगते या नहीं भुगते, कुदरत दंड दिया ही करती है। जिसकी जेब कटती है उसे जगत् के लोग आश्वासन देते हैं कि, 'लीजिये चाय पीजिये, ऐसा कीजिये, वैसा कीजिये, ऐसा है, वैसा है।' अब कुदरत क्या कहती है? जिसकी जेब कटी वही गुनहगार है, वह आज पकड़ा गया। दो आदमी साथ बैठे थे, फिर उसकी जेब ही क्यों कटी? मतलब पहले जो किया था उसका फल आज आया। वह जो चोर है वह तो पकड़ा जायेगा तब गुनहगार होगा, इस समय तो वह जलेबियाँ खा रहा है और जिसकी जेब कटी है वह इस समय भुगत रहा है। इसलिये जो भुगते उसकी भूल। 'इस समय रोता कौन है', यह देख लेना। रोनेवाला ही गुनहगार है, ऐसा समझना। भुगते उसकी भूल। वह (जेबकतरा) भुगतेगा तब उसकी भूल। इस जगत् का न्याय अलग है और कुदरत क्या कहती है? भुगते उसकी भूल। मतलब शोर नहीं मचाना। कौन भुगत रहा है, यह देख लीजिये, उसकी भूल। यह बात बहुत गहन है। यह बात यदि समझ में आये तो अंततः मोक्ष में जाये। बारीकी से सोचने पर अंततः मोक्ष में पहुँचा दे और बुद्धि से भूल देखने जाने पर तो कभी भी संसार से बाहर नहीं निकल पायेंगे। भुगते उसकी भूल के आधार पर आप समझें कि यह तो हम भुगत रहे हैं, इसलिये हमारी भूल है और वही समझ मोक्ष में जाने का मार्ग है।

इस जगत् में किसी का बंधन नहीं है। लाखों चोरों के बिच रहना पड़े और आप रात में सो जायें और आपकी जेब रूपयों से ठसाठस भरी हो मगर कोई चोर आपकी जेब को छू नहीं सकता, ऐसा नियमवाला जगत् है! इस जगत् का रेग्युलेटर (नियंत्रक) भी ऐसा है कि जगत् को पूर्ण रूप से रेग्युलेशन (नियंत्रण) में रखता है! मतलब यह जगत् कोई गप्प नहीं है।

यह क्रोध-मान-माया-लोभ ही दुःख देनेवाले हैं, बाहर का कोई दुःख नहीं देता। यह क्रोध-मान-

दादावाणी

माया-लोभ हमें ऐसा सिखाते हैं कि यह दुःख है, ऐसा आपको उलटा पढ़ाते हैं। बाकी बाहर तो इस जगत् में कोई दोषी है ही नहीं।

प्रश्नकर्ता : हमारा कर्म दोषी है ऐसा ही न?

दादाश्री : नहीं, आप खुद ही दोषी हैं, अन्य किसी का दोष नहीं है। आपकी जेब कट जाये तो जेब काटनेवाले का दोष नहीं है, आपके दोष को लेकर ही जेब कटती है! पूर्वजन्म के सारे हिसाब चुकता होते हैं। उसमें वह काटनेवाला तो इस समय मौजूद उड़ाता हो, पर आप आज पकड़े गये हैं।

प्रश्नकर्ता : हमसे कोई पच्चीस हजार रूपये ले गया हो और वापस नहीं लौटाता तो उसमें भी हम अपना पूर्वजन्म का ऋण ही चुकता करते होंगे क्या?

दादाश्री : सारा हिसाब ही है, इसलिये चिंता मत करना। वह कभी सामने आ मिले तो उस पर चिढ़ना नहीं, वर्ना एक तो रूपये गये और ऊपर से उसके साथ कर्मबंधन होगा।

प्रश्नकर्ता : 'वह ले गया यह ठीक हुआ' ऐसा कहना?

दादाश्री : 'ले गया वह ठीक हुआ' ऐसा नहीं बोलना, वहाँ मौन रहना। 'वह ले गया यह ठीक हुआ' ऐसा बोलें तब भी गुनाह कहलाये। अंदरूनी तौर पर समझ जाना कि यह हमारी भूल का परिणाम है। मुँह से कुछ बोलना नहीं वर्ना वह (ले जानेवाला) आदमी हम पर सवार हो जायेगा। प्रत्यक्ष तो ऐसा ही कहना कि, 'भैया, अनुकूल हो उतने, थोड़े-बहुत तो दीजिये।' ऐसा बोलना। अंदरूनी तौर पर समझना कि आये तो ठीक है और नहीं आये तो कुछ नहीं, पर मुँह से तो बोलना चाहिए। दूसरे को नहीं दिये और उसी को क्यों दिये? इसलिये हिसाब है। यानी बिना हिसाब के भेंट ही नहीं होती।

हमें (दादाजी को) सारा जगत् निर्दोष दिखता है। दोषी कोई है ही नहीं ऐसा जगत् दिखाई दे। कोई दोषी दिखाई देता है, यह अभी हमारी (खुद की) भूल है। कभी न कभी तो निर्दोष देखना ही पड़ेगा न? हमारे (खुद के) हिसाब से ही यह सब है, इतना संक्षिप्त में समझ जाने पर वह बहुत काम आयेगा।

आत्मा को जेब नहीं होती। यदि आप आत्मा हैं तो आपकी जेब नहीं होती, मतलब आपका कुछ कटता ही नहीं। कटी वह 'चंदुभाई' की कटी, पर 'आप' कहते हैं 'मेरी जेब कटी' मतलब आप 'चंदुभाई' हो गये, वही मिथ्यात्व है।

प्रश्नकर्ता : मैं एक संसारी होने के नाते बात करता हूँ कि यदि मेरी जेब कटती हो और मैं खुद देखता हूँ, मुझे खयाल हो कि जेब काटी जा रही है, तो उस समय मुझे क्या करना चाहिए?

दादाश्री : उस समय जब आपकी जेब कटती हो तब आप उसे पकड़कर यही कहेंगे कि, 'तू मेरी जेब क्यों काटता है?' और उसे गालियाँ देंगे और सब प्रयत्न करेंगे। पर वास्तव में क्या करना चाहिए ऐसा आप पूछना चाहते हैं? इसके उत्तर में मैं क्या कहूँ कि, 'आपकी जेब काटे कि तुरंत आपको भगवान की बात याद आनी चाहिए कि यह जेब काटता है वह, एक ओर की जेब में दोसौ रूपये पड़े है उसे नहीं काटते हुए दूसरी ओर की जेब में पाँच हजार रूपये पड़े है उसे काट रहा है, इसलिये यह मेरे कर्मों का उदय है।' वह जब जेब काट रहा है तब आपको कौन सा अच्छा संयोग प्राप्त हुआ है? सबसे बड़ा धर्मध्यान होने का संयोग प्राप्त हुआ है और उस समय आप रौद्रध्यान करते हैं। जेब काटता है तब आपके कर्मोदय से यह भाई आ मिला है और दोसौ रूपयेवाली जेब नहीं काटता, पर यह पाँच हजारवाली जेब उसके हिस्से में आई है, मतलब यह हमारा हिसाब चुकता हो रहा है।

प्रश्नकर्ता : यह तो कट जाने के बाद की बात

दादावाणी

बताई आपने, उस प्रकार धर्मध्यान करना, मगर जिस घड़ी कटती हो उस घड़ी क्या करना? उसे रोकना या फिर काटने देना?

दादाश्री : ऐसे कटने भी नहीं देना।

प्रश्नकर्ता : मुझे पता चला कि यह आदमी मेरी जेब काटता है तो मुझे क्या करना?

दादाश्री : आपकी दृष्टि में आये तो पकड़ना उसे, पर पकड़ने के बाद उस पर रौद्रध्यान नहीं करना। उसे कहना कि, 'भैया, मेरी जेब किस लिये काटता है? मैं ने तेरा क्या बिगाड़ा है? तुझे अड़चन हो तो यह ले तू सौ रुपये ले जा, मैं खुशी से देता हूँ। मुझे ये पाँच हजार तो वहाँ भरने के हैं।' ऐसे पचास-सौ रुपये उसे देना पड़े तो हर्ज नहीं पर ऐसा समाधानपूर्वक होना चाहिए। पकड़ना तो चाहिए। ऐसा नहीं कह सकते कि, 'हाँ, भैया काट ले। मेरे भगवान ने कहा है, काट ले।' ऐसा नहीं कहा जाये। पर उसके जेब काटने के पश्चात् क्लेश करना, वह सब फजूल है।

जेब काटनेवाला जेब काटता है, उसमें कुछ गलत नहीं होता। यह जगत् एक मिनट के लिये भी कानून के बाहर नहीं चला। फिर भी लोग कहते हैं कि, 'आज लोग नालायक हो गये हैं।' नहीं, ऐसे कोई नालायक हो ही नहीं गया है। यह सब कुदरत ही करवाती है और ये मनुष्य बिच में निमित्त हैं और वे इगोइज़्म करते हैं कि, 'मैं ने किया, मैं ने किया' बस उतना ही। मतलब किसी का भी दोष मत निकालना, क्योंकि दोष निकालने पर आप जिम्मेदार होंगे। जिम्मेदारी लेनी नहीं है न?

ब्याज वसूली के समय मौन उपाय

कुछ लोगों का एक अक्लमंदी का पॉइन्ट यह है कि वे ब्याज नहीं लेते। ब्याज खानेवाला मनुष्य क्रुअल (निर्दय) होता जाये। स्त्री-बहन को रुपये ब्याज पर दिये हों तो भी क्रुअल्टी (निर्दयता) करे।

पर इस समय ऐसा नहीं है। इसलिये बैंक के अनुसार लेना। खास करके किसी को उधार मत देना। जब वह नहीं लौटा पाये तब दुःख भी उतना ही होवे, भयंकर दुःख होता है। किसी मनुष्य को निजी तौर पर उधार मत देना। वर्ना मनुष्य का मन फिर कसाई हो जाये। इसलिये हमने तो हमारे साझीदार को पहले से कह दिया था कि हम ब्याज चुकाकर भले ही लायें पर हमें (किसी से) ब्याज नहीं लेना।

प्रश्नकर्ता : यहाँ पर तो ऐसा है कि हमने किसी को धंधे के लिये हजार, दो हजार डॉलर दिये हों और लौटाने को कहें तो सवाल करेंगे कि, कब दिये थे तुमने? तब उन लोगों से ऐसा कहा हो कि मैं ब्याज लूँगा। तो क्या बैंक रेट के अनुसार लेना चाहिए?

दादाश्री : ब्याज लेने में हर्ज नहीं। यह तो ब्याज लेने का व्यापार करते हैं, साहूकारी का धंधा। आपको क्या करना चाहिए? जिसको उधार दिया हो उसे कहना चाहिए कि बैंक में जो ब्याज होता है वह तुझे मुझे देना पड़ेगा। अब इस पर भी एक मनुष्य के पास ब्याज भी नहीं है और मुद्दल भी नहीं है तो वहाँ मौन रहना। उसे दुःख हो ऐसा वर्तन नहीं करना। मतलब हमारे पैसे गये ऐसा मानकर चला लेना। यदि पैसे दरिया में गिर गये होते तो क्या करते?

प्रश्नकर्ता : आप्तवाणी में कहा है कि देते समय ऐसा कहना कि 'कब लौटाओगे?' साल-डेढ़ साल में लौटा देना। पर अंदरूनी तौर पर समझना कि अब आनेवाले नहीं है।

दादाश्री : गये ऐसा मानकर ही चलें। 'नो पोजिटिवनेस', दरिया में गिर जाने के बाद क्या हम कहीं खोजने जायेंगे? नहीं खोजेंगे न?

अब आप हीरे की अँगूठी पहने घूम रहे हैं और कोई गुंडा आकर कहता है कि, 'अय उतार दे अँगूठी।' तब उतार देंगे कि नहीं उतार देंगे? वहाँ

दादावाणी

क्लेइम है किसी तरह का? मतलब यह यहाँ देंगे तो पहलेवाला नहीं मिलेगा, वर्ना पहलेवाला मिलेगा। धन का स्वभाव कैसा है? चले जाने का। समय आने पर चला जाए। इसलिये उसका उपाय यही होता है।

मन में से यह भाव निकाल दीजिए और निश्चय कीजिये कि यह ब्याज का धंधा ही नहीं करना है।

प्रश्नकर्ता : दस साल हो गये, नया धंधा नहीं किया।

दादाश्री : वह तो फँसने पर सबको वैराग्य आता है। अब फँसने का समय आ गया है। अभी यह समय फँसने का है। क्योंकि आज तक ले ले किया, सीझन अच्छे रहे। पर अब सीझन पूरा होने को है।

अनंत अवतार बहुत भटके। बाल सफेद हुए, तब से सिग्नल पड़ा (मृत्यु की ओर)। उतरने का प्लेटफॉर्म आ गया और तब भी रूपये नहीं छोड़े, इसलिये शास्त्रों में भगवान ने बताया कि ज्ञानी पुरुष की तन-मन-धन से सेवा करना।

दो झगड़े तब क्या करना?

प्रश्नकर्ता : व्यवहार में हमें ज्ञाता-द्रष्टा भाव रखना है, अब दो आदमी झगड़ते हैं, उसमें एक आदमी गलत है तो क्या हम वहाँ मौन रहें? क्योंकि हम उसे कुछ कहें तो वह सही माननेवाला नहीं है।

दादाश्री : मौन रहना ऐसा है पर क्या होता है यह 'देखना'। मौन रहने को कहें तब भी बिगड़ा और कहने को कहें तब भी बिगड़ा। चंदुभाई अपने आप उछलेंगे, आप देखना तो सही। उस घड़ी चंदुभाई क्या करते हैं यह 'देखना'।

प्रश्नकर्ता : गलत हो रहा है फिर भी चंदुभाई को ऐसा लगे कि नहीं बोलना, तब?

दादाश्री : नहीं। वह जिसे लगता है (भीतर

में) कि गलत हो रहा है वही बोलेगा। चंदुभाई क्या करते हैं, इसे 'देखना'। चंदुभाई को हमें दिशानिर्देश नहीं करना है कि ऐसा करें या वैसा करें। आप उत्तर में जायें, दक्षिण में जायें। ऐसा कहने की हमें ज़रूरत नहीं है। वे उत्तर में जाते हैं कि दक्षिण में जाते हैं, इसे 'देखना'। मतलब उन दोनों में से एक आदमी को तो उसे भी 'देखना'। थप्पड मारने में भी हर्ज नहीं है, पर क्या करते हैं उसे 'देखिये'।

प्रश्नकर्ता : बिच में कोई ऐसा थप्पड हमें मार दें तो उसे भी 'देखना'?

दादाश्री : उसे भी 'देखना'। ऐसे ही अभ्यास करते करते होगा न? आखिर तो उस अभ्यास पर आना पड़ेगा न? आज नहीं तो अगले अवतार में, पर ऐसा रोज़ाना अभ्यास तो करना होगा न? अभी से ही थोड़ा बहुत अभ्यास करके रखा हो तो क्या गलत है उसमें? अभ्यास करके रखा हो तो अच्छा ही है न? थोड़ा-बहुत, जितना हो पाया। वहाँ चंदुभाई क्या करते हैं, इसे 'देखते' रहना। हम भी यह 'पटेल' (दादाजी) क्या करते हैं, इसे 'देखा' करते हैं। क्या खाते हैं, क्या पीते हैं, किसका शौक्र है, यह सब 'देखा' करते हैं। शौक्र होने पर मुझे लड़कर बंद करवाना नहीं है, जो हो सो भले ही हो।

यह तो कोई बार ऐसा इधर-उधर हो जाये, बाकी ज्ञाता-द्रष्टा स्वभाव में आये मतलब यह ज्ञाता-द्रष्टा चंदुभाई का दोष दिखाये और चंदुभाई वह सामनेवाले का दोष दिखाये।

प्रश्नकर्ता : अंदर से ऐसा होता है कि हमें ज्ञाता-द्रष्टा रहना है, कुछ करना नहीं है और बाहरी वर्तन ऐसा हो जाये कि सामनेवाले को चाँटा लगा दें।

दादाश्री : चंदुभाई क्या करते हैं यह, 'देखिये'। फिर हम कहें कि, 'चंदुभाई, ऐसा क्यों करते हैं? इसके प्रतिक्रमण कीजिये'।

प्रश्नकर्ता : इतना कहने पर पहुँच जाये?

दादावाणी

दादाश्री : सभी पहुँच जाये। इशारा ही काफी है। चंदुभाई थोड़े ही अनपढ़ हैं? सब जानते हैं पर प्रकृतिवश हो जाता है।

प्रश्नकर्ता : जब कभी ऐसा हो जाये, तब हर बार अंदर से ऐसा विचार आता है कि, यह गलत हो रहा है। ऐसा क्यों होता है?

दादाश्री : गलत होता है कि सही होता है, इसकी झंझट में हमें नहीं पड़ना है। वह सब चंदुभाई करेंगे। चंदुभाई क्या करते हैं, इसे हम 'देखा' करें। डिस्चार्ज यानी जो माल भरा है वही निकलता है, गलन होता है। मतलब वर्तमान ज्ञान ऐसा कहता है कि बखेड़ा नहीं करना है। पहले के आधार पर बखेड़ा हो जाता है अथवा उसके पक्ष में हो जाते हैं। उन दोनों के बिच घर्षण चलता रहता है। वह चलता ही रहे न! मगर बखेड़ा नहीं करना ऐसा आज का हमारा ज्ञान बताता है, जो कि आत्मा का हिस्सा है और बखेड़ा हो जाता है, वह चंदुभाई ही करते हैं।

प्रश्नकर्ता : मतलब हमें उसमें से ऐसे अलग हो जाना है कि, हमारा उसमें कोई लेना-देना नहीं है?

दादाश्री : लेना-देना नहीं है और हमें उसका ज्ञाता-द्रष्टा रहना है। हद से ज्यादा किसी को कोई आकुलता करवाये और किसी को दुःख हो जाये तो हमें कहना पड़े कि, 'आप बिना वजह ऐसा क्यों करते हैं? अब और कितने दिन बंधन में बंधना है?' ऐसा-वैसा ज़रा कहना। मगर चिढ़ना नहीं उसके ऊपर। उसके ऊपर चिढ़ने का क्या अर्थ? प्रकृति, जिसमें पम्प मार-मार कर चेतन भरा हो, उसमें क्या खोजते हैं? और यदि कुछ हो जाता है तब भी लड़ने से क्या फ़ायदा?

प्रश्नकर्ता : मतलब यह जो अंदर रहा करता है, उसमें बखेड़ा नहीं करना। आज का ज्ञान ऐसा दिखाता है और...

दादाश्री : वह नहीं करना ऐसा आज का ज्ञान

कहता है। ज्ञान यानी आत्मा। यह जो प्राप्त हुआ है वह आत्मा। बखेड़ा नहीं करना यह ज्ञान है। बखेड़ा हो जाता है वह प्रकृति, वह अज्ञान है। जो बखेड़ा होता है उसे ज्ञान 'देखता' है, बस। वह ज्ञाता-द्रष्टा भाव में आ गया। जो भूल हो गई, उसे 'जाने' वह आत्मा। खुद की भूल को 'देखे' और 'जाने, उसका नाम आत्मा। बखेड़ा हो गया वह भूल और उसे आपने देखा मतलब वह भूल निकलकर रवाना हो गई। बिना 'देखे' और 'जाने' भूल नहीं जाती। पकड़ में आनी चाहिए। 'देखे नहीं निज दोष तो तरना कौन उपाय?' तुझे सारे दोष दिखाई देते हैं न?

प्रश्नकर्ता : दिखाई देते हैं।

दादाश्री : सारे दिखाई देते हैं न? उसे ही विज्ञान कहा। कोई विज्ञान ऐसा नहीं है जो खुद के दोष दिखलाये!

प्रश्नकर्ता : हाँ जी, यह तो सूक्ष्म से सूक्ष्म दोष दिखलाता है।

दादाश्री : सूक्ष्म से सूक्ष्म, छोटे से छोटा। भीतर प्रतिक्रमण भी चालू करवाये।

टकराव में मौन हितकारी

प्रश्नकर्ता : टकराव टालने की, 'समभाव से निपटारा' करने की हमारी वृत्ति होने पर भी सामनेवाला आदमी हमें परेशान करे, हमारा अपमान करे तो हम क्या करें?

दादाश्री : कुछ नहीं। वह हमारा हिसाब है, इसलिये हमें 'समभाव से निकाल (निपटारा)' करना है ऐसा निश्चित रखना। हम अपने कायदे में ही रहें, और हम अपने आप अपना 'पझल' 'सौल्व' करते रहें।

प्रश्नकर्ता : सामनेवाला मनुष्य हमारा अपमान करे और हमें अपमान लगे, उसका कारण हमारा अहंकार है?

दादावाणी

दादाश्री : वास्तव में सामनेवाला अपमान करता है, वह हमारा अहंकार पिघला देता है, और वह भी पहलेवाला 'ड्रामेटिक' अहंकार। जितना 'एक्सेस' अहंकार होता है उतना पिघलता है, उसमें क्या बिगड़नेवाला है? ये कर्म छूटने नहीं देते।

आपके साथ किसी ने अन्याय किया और आपको ऐसा लगे कि, 'मेरे साथ यह अन्याय क्यों किया?' तो आपको कर्म बंधेगा। क्योंकि आपकी भूल के कारण सामनेवाले को अन्याय करना पड़ता है। अब इसमें मति कहाँ पहुँच पाये? जगत् तो किंकियाने लगे (शोर-गुल करने लगे)। भगवान की भाषा में कोई न्याय भी नहीं करता और अन्याय भी नहीं करता, करेक्ट (सही) करता है। अब इस में इन लोगों की मति कैसे पहुँचे? घर में मतभेद कम हो, झंझट कम हो, पास-पड़ोसवालों का प्रेम बढ़े तो समझना कि बात समझ में आई, वर्ना बात ही समझ में नहीं आई है। ज्ञान कहता है कि, यदि तू ने न्याय खोजा तो तू मूर्ख है। इसलिये उसका उपाय है, तप। किसी ने आपके साथ अन्याय किया हो तो भगवान की भाषा में वह 'करेक्ट' (सही) है, जिसे सांसारिक भाषा में 'गलत हुआ' कहेंगे।

यह जगत् न्याय स्वरूप है, गप्प नहीं है। एक मच्छर भी आपको यों ही छूनेवाला नहीं है। मच्छर छूआ यानी इसके पीछे आपका ही कोई कारण (हिसाब) है। बाकी यों ही एक स्पंदन भी आपको छूए ऐसा नहीं है। आप संपूर्ण स्वतंत्र हैं। किसी का अवरोध आपको नहीं है।

प्रश्नकर्ता : टकराव में मौन हितकारी होता है कि नहीं?

दादाश्री : मौन तो बहुत हितकारी कहलाये।

प्रश्नकर्ता : पर दादाजी, बाहर मौन हो पर भीतर तो घमासान (भीषण युद्ध) चल रहा हो तो उसका क्या?

दादाश्री : वह काम नहीं आता। मौन तो सब से पहले मन का होना चाहिए।

खराब किया, वहाँ सेवें मौन

प्रश्नकर्ता : सामनेवाला निर्दोष लगे ऐसी जागृति निरंतर रहनी चाहिए न?

दादाश्री : निर्दोष देखने में आपको बहुत देर लगेगी। पर दादाजी ने कहा है, इसलिये शायद आपको निर्दोष दिखे तो वह केवल कहने के लिये है। ऐसा आपको एक्झेकट (यथार्थ) नहीं दिखनेवाला।

प्रश्नकर्ता : क्या हमें ऐसा अनुभव नहीं होता?

दादाश्री : इस समय आपको अनुभव में नहीं आता।

प्रश्नकर्ता : हम मन में मान लें कि हाँ, वह निर्दोष ही है तब?

दादाश्री : यह ज्ञान हुआ मगर वह अनुभव कभी न कभी होगा, पर इस समय तो पहले ही ऐसा तय कर डाला मतलब हमें झंझट नहीं न? निर्दोष है ऐसा कहने पर फिर हमारा मन नहीं बिगड़ता। किसी को दोषी ठहराने पर पहले आपका मन बिगड़ता है, जो आपको दुःख देगा ही। क्योंकि वास्तव में वह दोषी है ही नहीं। आपकी अक्ल से ही दोषी दिखाई देता है और वही भ्रांति की जगह है। हाँ, अब आप मुझे बार-बार कहते रहें पर मैं किसकी फरियाद सुनूँ?

प्रश्नकर्ता : अभी आपने कहा कि आप मुझे बार-बार कहें?

दादाश्री : हाँ, आप ऐसी सब बातें करते हैं न कि फलाँ ऐसा करता था, फलाँ वैसा करता था, अब आपकी समझ में आया कि यह सब गलत है?

प्रश्नकर्ता : हाँजी।

दादाश्री : यह समय सारा व्यर्थ गँवाया। सभी निर्दोष है ऐसा समझे कि हल निकल आया।

दादावाणी

प्रश्नकर्ता : कोई हमारी जेब काटे, तब तुरंत हम ऐसा कहें कि, यह मेरे कर्मों का उदय हुआ, तो वह आदमी तुरंत निर्दोष दिखाई देगा क्या?

दादाश्री : यह मेरे ही कर्मों का उदय है, इतना यदि ज्ञान में आ गया तो वह निर्दोष दिखाई दे, वह सही है। वह अनुभवजन्य कहलाये।

प्रश्नकर्ता : हमारा कर्म का दोष है ऐसा दिखाई दे तो?

दादाश्री : हाँ, यही कि यह मेरे ही कर्म का उदय है, इसमें उसका दोष नहीं है। यह है तो जागृति कहलाये।

और यों ही आप कहें कि, सारा जगत् निर्दोष है, तो वह अभी पूर्ण रूप से आपके अनुभव में नहीं आया।

मतलब यह कुछ मामलों में आपका ऐसा डिसाइड (नक्की) हो जाये और कुछ मामलों ऐसी रहेगी कि जिसमें डीसीज़न (निर्णय) नहीं होगा, मतलब आप फिर वह मान ही लेना। आगे समय आने पर वह डिसाइड हो जायेगा। हमें जवाब मालूम होने पर फिर हिसाब लगाते लगाते जवाब आ जाने पर डिसाइड हो जायेगा। जवाब जानते हों तो अच्छा है न?

प्रश्नकर्ता : हाँजी। अब कोई भी कार्य में हमें कैसा भी फल प्राप्त हो, प्लस या माइनस (कम या ज्यादा), पर वह हमारे कर्म के अधीन ही है, ऐसा मान लिया जाये...

दादाश्री : हाँ, दूसरा कुछ है ही नहीं। हमारा ही है सब। माइनस कहें तो भी हमारा और प्लस कहें तो भी हमारा। पर व्यवहार में कोई कुछ अच्छा करे तो हमें उसे कहना चाहिए कि, 'भैया, आपने अच्छा काम कर दिखाया' और खराब करने पर उसे ऐसा मत कहना कि, आपने खराब किया।

प्रश्नकर्ता : तब उसे क्या कहना?

दादाश्री : उसे कुछ भी नहीं कहना। उसके प्रति मौन रहना। क्योंकि अच्छा नहीं कहने पर उसे एन्करेजमेन्ट (प्रोत्साहन) नहीं मिलता। उसके मन में ऐसा होगा कि, यह शेट तो कुछ बोलते ही नहीं। वह तो ऐसा ही समझे न कि, 'यह मैं ने किया।' हमारे कर्मों के उदय से वह करता है, ऐसा तो उसे मालूम नहीं। वह तो कहेगा, 'यह मैं ने मेहनत करके किया है।' तब हमें 'हाँ' कहनी पड़े।

व्यवहार में सेफसाइड, मौन के द्वारा

डिप्रेसन आये उस घड़ी 'यह मेरा स्वरूप नहीं है, मैं शुद्धात्मा हूँ, इस डिप्रेसन को जानता हूँ' वह अलग है ऐसा निश्चित हो गया कि हो गया कल्याण! जागृति को ही सँभालते रहें, उसका ही पोषण करते रहें, वही शुद्धात्मा है।

प्रश्नकर्ता : और वास्तव में 'खुद' जाननेवाला ही होता है न? डिप्रेसन कब आया? कितना आया? पीछे कि तुलना में यह कम है कि ज्यादा है?

दादाश्री : हाँ, सब जानें।

प्रश्नकर्ता : जिस प्रकार डिप्रेसन को जाननेवाले आत्मा की तरह रहना है, उसी प्रकार एलिवेशन के समय भी जाननेवाले के तौर पर रहे तो डिप्रेसन का वक्त नहीं आये न?

दादाश्री : अपनी कुछ (प्रसंशा) सुनते ही टाइट हो जाये, मतलब आत्मा जान जाये कि सीना तान लिया। एलिवेट हुआ है इसलिये डिप्रेसन आये बगैर नहीं रहता।

प्रश्नकर्ता : तो एलिवेशन के समय अंदर ऐसी जागृति रखें कि आप टाइट हुए?

दादाश्री : ऐसी जागृति रही तो हो गया कल्याण।

दादावाणी

प्रश्नकर्ता : मतलब जितना एलिवेशन होता है उतना ही डिप्रेसन होता है न?

दादाश्री : डेढ़सौ फीट की ऊँचाई वाली कुर्सी पर बैठा हो तो डेढ़सौ फीट नीचे आ गिरेगा।

बहन की भूल होने पर भाई उसे डिप्रेसन हो जाये ऐसा बोले, पर बहन को खुद को डिप्रेसन आता नहीं न? वह तो 'तू बहुत बुरा आदमी है।' ऐसा बोल दे। मतलब खुद ने डिप्रेसन की मार खाई और सामनेवाले को डिप्रेसन की मार खिलाई। यानी डबल गुनाह हुआ। भुगतना भी उतना ही पड़े। मतलब बहुत भारी भुगतना पड़े। खुद की भूल होने पर भी सामनेवाले पर एटेक करे और उसे धमकाये, वह डबल गुनाह। उसके रिएक्शन में डिप्रेसन बढ़ जाये। मगर उस घड़ी फिर आनंद ले कि मैं ने उसे कैसी करारी सुनाई!

प्रश्नकर्ता : फिर मन में ऐसी गिनती होती है कि ऐसी करारी सुनाऊँगा तो दूसरी बार मेरे साथ ऐसा डिलिंग नहीं करेगा।

दादाश्री : ऐसी सभी गिनतियाँ होती हैं।

प्रश्नकर्ता : सामनेवाला धमकाये तो उस समय खुद कैसे पेश आये?

दादाश्री : धमकाये तो हँसना। वह धमकाता हो तो हमें चंदुभाई से कहना चाहिए कि, 'क्या चंदुभाई, आपने ऐसे गुनाह किये थे, जो लोग ऐसी सुनाने आते हैं। आपको शर्म नहीं आती?'

प्रश्नकर्ता : ऐसा ही कहना चाहिए। ठीक है। पर ऐसा उसका धमकाना हमारे कर्मों का उदय ही कहलाये न?

दादाश्री : और क्या?

प्रश्नकर्ता : मतलब मूलतः यह जागृति रखनी चाहिए और व्यवहार में कैसा रखना चाहिए?

दादाश्री : व्यवहार में यदि सेफसाइड चाहिए तो मौन रखना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : मौन देखने पर वह ज्यादा धमकाये न?

दादाश्री : वह बोल जाये (धमका जाये) तो उसे बोझ लगेगा, हमें क्या? वह तो ऐसा है ही।

जब डिप्रेसन आये उस घड़ी हम कहें, 'क्या रोब जमाता था?' ऐसा जो कहे हम, वही आत्मा! डिप्रेसन भोगनेवाला वह, जो सवार हुआ था, वही उतरे। उसे जाननेवाला आत्मा। डिप्रेसन हुआ है यह जो मालूम होता है, वह किसे? आत्मा को। मतलब तुझे तो उलटे उस घड़ी ऐसा कहना चाहिए, 'देख, बहुत उछल-कूद करके सवार हुआ था न? कैसा स्वाद आया?' ऐसा बोलने पर बहुत फ़ायदा हो, जबरदस्त फ़ायदा हो। हर बार ऐसा बोलने पर प्रतिक्रमण भी नहीं करने पड़ें।

हम भी कहें (दादाजी की खुद की बात), 'मिर्च खाना है न? खाँसी में क्या रोब जमता है आपका?' पहले तो तले हुए सारे मिर्च खा जाये! बाद में बंद कर दिये। वैसे तो हम बंद नहीं करते! पर अब हम तय करें कि यह नहीं चाहिए, क्योंकि सारा असर शरीर पर पड़ता है न! आत्मा कहाँ है यह समझ लिया न? जो चढ़ता-उतरता है वह कौन?

प्रश्नकर्ता : आप अंदर में तो कई बार ऐसा अलग रखते होंगे मगर कई बार मुँह से बाहर भी ऐसे अलगपन के बारे बोलते हैं।

दादाश्री : हाँ, बोलता हूँ न बाहर।

प्रश्नकर्ता : मतलब ऐसा बाहर बोलें वह ज्यादा इफेक्टिव?

दादाश्री : उसका बहुत असर होता है, मतलब जुदा हो गये न? बाहर दिखाई देनेवाला भी जुदा हो गया और जुदा ही है।

दादावाणी

प्रश्नकर्ता : जब कभी उलटी वाणी निकलती है न, तब बोलती हूँ कि, 'तुम डायन समान लगती हो!'

दादाश्री : डायन! ऐसा कहती हो? इससे फिर सारे संबंध टूटते जायें। संबंध तोड़ना है, ऐसा बोलने पर संबंध टूट जाये, क्योंकि प्रकृति को बुरा लगे बगैर नहीं रहता।

कोई अड़ जाये, वहाँ ज्ञानी मौन

प्रश्नकर्ता : दादाजी का 'ज्ञान' मिलने के बाद सामान्य रूप से जीवन कैसा होना चाहिए?

दादाश्री : बिना खींच के जीवन जीना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : कैसे खींचा जाता होगा?

दादाश्री : आप मेरे साथ बात करते हों और मैं उसका उत्तर दूँ। इस पर आप अपनी बात सही ठहराने के लिये फिर से बात करें, वह खींच कहलाये। ऐसे हर समय खींच रखे। यदि 'ज्ञान' लिया हो तो खींच ही नहीं होती। और यदि खींच रहती हो, तो निकाल बाहर करना। क्योंकि वह गलत है। और यदि निकालने पर भी नहीं निकलती है, तो उसमें हर्ज नहीं। यदि खींच रही तो 'आप' उस खींच को देखा करें, तो 'आप' मुक्त हुए। खींच को यदि आप देखें तो छूट गये। तो आप हमारे कायदे में हैं।

यह खींच एक अलग वस्तु है। खींच यानी, मैं कहूँ कि 'नहीं भैया, ऐसा है।' मतलब फिर इस पर उनका अपना सत्य करवाने के लिये, बार-बार उसे दोहराते रहना, वह खींच कहलाये। और जहाँ खींच होती है, वहाँ खींचवाले के पास किसी प्रकार का सत्य होता नहीं है। खींच ही सब से बड़ा दूषण है। यानी यह खींच नहीं इसका मतलब क्या है कि आप कहें कि, 'मुझे अच्छा नहीं लगता।' तब वह (सामनेवाला) कहेगा, 'ठीक है, यहीं बंद कर देते हैं।' और कोई झंझट ही नहीं न!

प्रश्नकर्ता : अपना सही करवाने कोई आदमी अनेकों तर्क पेश करें और खुद को सही ठहराने का प्रयत्न करें, तब क्या यह समझना कि 'बेझ' (आधार) गलत है?

दादाश्री : पर इस हालात में तर्क भी खुद की जागृति के साथ नहीं पेश किये जाते। अजागृति होने पर ही तर्क होगा। मनुष्य जब अजागृत होता है तब तर्क करता है। जागृतिवाला कही तर्क करता है कभी?

प्रश्नकर्ता : तर्क पेश करना गलत है कि सही है?

दादाश्री : संसार में वह सही है। संसार में यदि आप कुछ करना चाहते हैं तो सही है, पर यदि मोक्ष में जाना है तो गलत है। संसार में यदि आप दलील नहीं करते तो लोग आपका ले जायेंगे। और यहाँ सत्संग में दलील वस्तु ही गलत है। 'ज्ञानी पुरुष' ने कहा, उसमें बोलने को होता ही नहीं। यह सत्संग की बात हो, उसमें बोलना नहीं होता। व्यवहार में बोलना पड़ता है। व्यवहार में आप ऐसा कहें कि, 'दादाजी, आप इस गाडी से नहीं जाना, उस गाडी में जाइये।' मगर इस सत्संग में (कुछ बोलें तो)? हमें कहना पड़े, कितने सयाने! बड़े सयाने!! ऑवरवाइज़!!!

यह तो 'सायन्टिफिक' विज्ञान है। कुछ तो मुझ से कहते हैं, 'कायदे बनाइये, ऐसा करो, वैसा करो।' अरे, कैसे मनुष्य हो, जो ऐसा विज्ञान मिलने पर भी सयाने नहीं हुए? कैसा विज्ञान! ज़रा-सा भी टकराव नहीं होने दे ऐसा।

प्रश्नकर्ता : आजतक कायदे बनाकर ही लोगों को सयाने बनाने का मार्ग था न?

दादाश्री : हाँ, लोगों के लिये ठीक है, पर हमें तो मोक्षमार्ग पर जाना है। लोगों को तो संसार में भटकना है, उनको कायदा चाहिए। बाकी कानून से तो टकराव होता है और टकराव से फिर संसार खड़ा होता है।

दादावाणी

प्रश्नकर्ता : मोक्षमार्ग पर जाने में भी कानून दिखलाये हैं?

दादाश्री : मोक्षमार्ग पर जाने में कानून नहीं होता। यहाँ पर तो कानून या कुछ भी नहीं है, सहज! सहज रूप से जो होता है वह सही।

प्रश्नकर्ता : आपने बताया कि, 'जहाँ मोक्ष है वहाँ कानून नहीं है, कानून है वहाँ मोक्ष नहीं। हाँ, परम विनय से मोक्ष है।' तो परम विनय में क्या सब समा गया?

दादाश्री : हाँ, परम विनय में सब समा गया। कानून बनाने जाने पर फिर, तुलसी लगाई उसे चूहा काट गया, इसलिये बिल्ली पालो। बिल्ली ने दूध बिगाड़ा, इसलिये कुत्ता रखो। इसका कोई अंत होता है क्या? मतलब यह 'नो लॉ लॉ' का कानून है। और यह तो 'विज्ञान' दिया है। इसमें कोई इधर-उधर करने जाये, बखेड़ा करने जाये तो वही उसका पागलपन है। वह तो 'ऑवरवाइज़नेस' (लाल-बूझक्कडपना) है।

हम तो जैसा है वैसा सब बता दें, फिर ज़िद करे, तब हम जाने कि बहुत भयंकर अज्ञानता है। वह खुद का ही अहित कर रहा है। फिर हम बोलते नहीं। हम मौन रहें। ज़िद पर अड़ गया माने उसे मेरी बात दिखाई ही नहीं देती। दिखाई देने पर ज़िद पर थोड़े ही अड़ता है कोई?

मतलब यहाँ पर तो कैसा है? बहुत समझदारी से रहना। 'परम विनय' शब्द कहा इसके माने इतना समझ लेना कि बगैर काम के कुछ बोलना-करना नहीं। जरूरत पड़े तब बोलना। अपना सयानापन कि अपनी अक्ल यहाँ पर खुली मत करना। आपकी अक्ल सारी नकल हैं, दरअसल नहीं है। मतलब लोगों से सिखे, किताबों से सिखे और फिर ज़िद पर आ जाते हैं तो अटकते तक नहीं। ज़िद पर आ जाने पर पता ही नहीं रहता कि यह ज़िद पर आ रहा

हैं? ज़िद पर आना यानी अपने स्थान पर से नीचे गिरना।

प्रश्नकर्ता : पहले तो आप टोकते थे कि वह गिरा, गिरा, गिरा!

दादाश्री : वह तो आज भी कहता हूँ न! पर ऐसा किसे कहा जाये? ऐसा तो कुछ लोगों को ही कहा जाये कि, 'गिरा, गिरा'। औरों को तो हमें निबाह लेना पड़े, क्योंकि अभी ऐसी शक्ति उन लोगों में नहीं आई है। कुछ कहने पर बेचारा वापस चला जाये, फिर। जिसने खुद का 'हित-अहित' जान लिया है, उसे ऐसा कहेंगे। सबको ऐसा नहीं कह सकते। वर्ना तुरन्त चलते बने वे तो! 'ये चले, हमारे घर पर बहू है, माँ है, सब है, हम थोड़े कुँआरे हैं?' ऐसा कहे। 'नहीं भैया, तू शादीशुदा है, तू हर तरह से ठीक है। पर यदि यहाँ आकर भटक गया तो यह स्टेशन फिर नहीं आनेवाला, लाख अवतार भटकने पर भी!' इसलिये बच्चे की तरह समझाकर बिठाना पड़े, ऊपर से गोलियाँ खिला-खिलाकर। मैं ने सभी से कहा है न, कि किसने समझ-बूझकर यह ज्ञान लिया है? इन सभी को 'आओ, आओ, यह तो ऐसा है, वैसा है' ऐसे फुसला-फुसलाकर ज्ञान दिया है।

आक्षेप पचाइये, ज्ञान से

कोई कहे कि, 'तुम तो नालायक हो।' तब कहना, 'भैया, तू ने तो आज जाना, हम तो शुरू से ही ऐसे हैं।' मतलब उसका निपटारा हो गया। और ऐसा हम पहले से नहीं जानते क्या?

प्रश्नकर्ता : हम ऐसा कहें न कि, 'हम तो पहले से ही नालायक थे, तू ने आज जाना।' तो वह कहेंगे कि, 'नालायक हो ही साथ-साथ बेशर्म भी हो।' ऊपर से ऐसा कहें।

दादाश्री : तब कहना, 'भैया, बाकी हमारी समझ तो ऐसी है।' हो सके वहाँ तक बोलना नहीं, मौन से ही निपट सके तो निपटा लेना। पर यह तो

दादावाणी

अपने मन से कहना है। मन समाधान चाहेगा कि नहीं चाहेगा?

प्रश्नकर्ता : हाँजी।

दादाश्री : मतलब ड्रामेटिक (नाटकीय) उसी का नाम कि वह हार्टिली (दिल से) ही होता है। हार्ट सारा ही ड्रामे में जाता है। 'हम' ड्रामा के बाहर हैं। हार्टिली ड्रामा करना चाहिए!

प्रश्नकर्ता : तो हार्टिली ड्रामेटिक बातचीत करते समय यह भी जागृति होनी चाहिए न कि दूसरों को किंचित्मात्र दुःख नहीं हो?

दादाश्री : वह जागृति अपने आप होती ही है। आप ड्रामेटिक बोलेंगे, मतलब आपकी हार्टिली वाणी होती ही है। यदि जागृति कम हो तो वह ड्रामेटिक नहीं कहलाये। जागृति फुल (पूर्ण), उसका नाम ड्रामेटिक। जैसे, व्यवहार में नाटकीय पात्र के तौर पर मैं राजा भर्तृहरि (चंदुभाई) और भीतर असल में मैं लक्ष्मीचंद अभिनेता (शुद्धात्मा), यह सब जागृति रहनी चाहिए।

ड्रामेटिक बोलने पर किसी फाइल (व्यक्ति) के साथ अनबन नहीं होगी। और ये फाइलें साथ आनेवाली हैं। यह फाइलें कुछ एकदम से डिसमिस होनेवाली नहीं हैं, वे साथ आनेवाली हैं। हाँ, क्योंकि वे रिएक्ट हुई हैं न? यानी फाइलें खराब मत करना। वे छूटनेवाली नहीं हैं। इस फाइल से निपटारा करने के लिये आरोपित भाव से जहाँ 'मैं हूँ' है वहाँ ड्रामेटिक भाव रखना। ड्रामे का निपटारा तो करना होगा न?

मौनम् धारयते

समभाव से निपटारा करते करते कॉर्ट के चक्कर हो जाये, कुछ और हो जाये, तब भी आगे बढ़ने में वह हर्ज नहीं करता। वह तो भैया आपका पहले का ऐसा हिसाब था, पगला हिसाब, इसलिये

सब समायोजन करना पड़े और आपको अकेले करना पड़े। मन में ऐसा भी हो कि कॉर्ट और यह सब, ऐसा करने की नौबत आई? मतलब फिर संयोग आ मिले पर हम तो जैसे कुछ भी नहीं हुआ है, इस प्रकार से रहें। प्रकृति, प्रकृति के साथ लड़े, उसमें हमारा क्या? और यह प्रकृति लाख रूपये उधार दिये हैं, उसे वापस लेने के लिये लड़ती हैं और वह प्रकृति लाख रूपये नहीं देने के लिये लड़ती हैं, उसे देखते रहना। उसके लिये फरियाद ही नहीं होती। फरियाद करना यह भी गुनाह है।

यह मशीन में गियर होते हैं, उसमें उँगली आ जाये, तो क्या वह उसे छोड़ दें? मतलब शोर मचाने का अर्थ ही नहीं है। मशीन यदि हमारी ही बनाई हुई हो तब भी हमें छोड़ेगी क्या? वहाँ शोर मचायें कि भैया, मेरी बनाई हुई है तू, तो वह गियर क्या काटे बगैर छोड़ देगी?

प्रश्नकर्ता : नहीं छोड़ती।

दादाश्री : ये सभी गियर हैं। मनुष्य नज़र आते हैं, पर फिर भी गियर ही है। इसलिये शोर मचाने का कोई अर्थ ही नहीं न? ऐसा जो वक्त है वह पूरा हो जायेगा। फिर ऐसा वक्त दोबारा आयेगा ही नहीं। हिसाब चुकता करना है और तब तक हमें क्या करना होगा? मौनम् धारयते!

मौन रहकर निपटायें चिकनी फाइलें

चिकनी फाइल हमारे करीब ही होती हैं, बाहर इधर-उधर नहीं होती। चिकनी यानी साबुन लेकर बार-बार धोने पर भी (चिकनाहट) नहीं जाती। जैसे कपड़ा कोलतारवाला हो गया हो, उस पर साबुन घिसने पर क्या होता है? कोलतार उलटे साबुन को लग जाये, ऐसी फाइलें। वहाँ पर जागृति रखनी पड़ती है, कि साहिब, अब मैं क्या करूँ? मेरा तो ऊँचे दाम का साबुन है, यह साबुन घिसने पर उलटे साबुन को चिपकता है। तब ज्ञानी पुरुष मिट्टी का तेल ला देंगे,

दादावाणी

उसके अंदर डूबो देना। दो लीटर बिगड़ेगा पर उसमें डूबो देने पर काम पूरा हो जाये। ज्ञानी पुरुष रास्ता दिखायें, वर्ना पानी से तो वह जानेवाला नहीं है। ज्यों-ज्यों पानी डालें त्यों-त्यों और चिकना होता जाये। चिकनी फाइलों पर हमारे लोग तो बार-बार पानी डालते रहें!

प्रश्नकर्ता : चिकनी फाइलों का निपटारा करने जनम तो लेने ही होंगे न? इन फाइलों को लेकर ही झंझट है न?

दादाश्री : सही कहते हैं। फाइलों के निकाल हेतु ही है। देखना, फाइलों के साथ फिर से बैर मत बाँधना, बैर को लेकर ही हिसाब खड़े रहे हैं। आखिर फाइलों को छोड़कर ही जाना है। चिकनी फाइल नहीं रही तो संसार अच्छा लगेगा। मोक्ष हेतु वह (अच्छा लगना) नुकसानदेह है।

प्रश्नकर्ता : दादाजी, ऐसी चिकनी फाइलों से निपटारा करने की कला दिखलाइये।

दादाश्री : उसका निपटारा करना। बस एक ही बात, मानों हमारा दिमाग सुन्न हो गया हो ऐसे मौन हो जाना चाहिए। और कोई उपाय नहीं है, बोले कि बिगड़ा।

प्रश्नकर्ता : हम मौन रहें फिर भी सामनेवाले का बखेड़ा हमारे लिये चालू ही रहा करे...

दादाश्री : हाँ, रहा ही करे।

प्रश्नकर्ता : इसलिये ऐसी कला सिखलाइये कि सामनेवाली फाइल खुश रहे और निपटारा हो।

दादाश्री : खुश रखना बड़ा मुश्किल है। उनकी धारणा के अनुसार नहीं होने पर वह खुश नहीं रहता।

प्रश्नकर्ता : दादाजी, मेरे अनुभव में ऐसा है कि किसी मनुष्य को खुश करना चाहो तो जान-

बूझकर ठगा जाना पड़ता है, तभी वह खुश होता है, वर्ना नहीं होता। यानी इस समय हमें जो दुःख है अथवा उनको कोई दुःख है इसकी वजह हम अपनी पकड़ नहीं छोड़ते हैं और वह अपनी पकड़ नहीं छोड़ता है।

दादाश्री : पकड़ ही नहीं छोड़ते। पकड़ छोड़ दी कि हल निकल आया।

प्रश्नकर्ता : दादाजी, यदि घरवाले उनकी पकड़ रखें और हम अपनी पकड़ छोड़ दें तो सत्संग गवाँना पड़े।

दादाश्री : यदि ऐसे सत्संग गवाँना पड़ता हो तो हम अपनी पकड़ रखें, मगर सत्संग नहीं गवाँयें। बाद में देखा जायेगा। कम से कम घाटा हो ऐसा धंधा करना। कम से कम घाटा माने क्या कि सत्संग में जाने पर सौ का मुनाफा हो, और वहाँ पकड़ पकड़ने का तीस रूपये दंड भरना पड़ा, तब भी सत्तर तो हमारे घर में रहे न!

प्रश्नकर्ता : वीतराग विज्ञान के क्या कहने! सही है, तब भी मुनाफा रहे!

दादाश्री : मतलब हमें कुछ मुनाफा होता हो तो ठीक है, वैसे और कुछ नफा-नुकसान होता ही नहीं है। वह तो अहंकार का प्रोजेक्शन है। संसार माने क्या? अहंकार का प्रोजेक्शन, सामनेवाले को मारना और जीतना।

प्रश्नकर्ता : सत्संग में आता हूँ यह घरवालों को पसंद नहीं है। बाकी हम उनके साथ कोई उलटा व्यवहार नहीं करते, फिर भी खुश क्यों नहीं होते?

दादाश्री : जहाँ तक तुझे हिसाब भुगतना है, वहाँ तक खुश कैसे होंगे?

प्रश्नकर्ता : यदि खुश नहीं होते तो भी हर्ज नहीं, पर नॉर्मल रहे न, तब भी हमें कुछ अच्छा लगे।

दादाश्री : नॉर्मल रहते ही नहीं। नॉर्मल नहीं

दादावाणी

हो तो भी हम 'वे खुश ही हैं' ऐसा समझें। उनको हम अच्छे नहीं लगते। हमारे आचार-विचार उनको पसंद नहीं, ऐसा जानने पर भी हमें उनके साथ बैठकर खाना पड़े, रहना पड़े, सोना पड़े, 'हाँ' कहनी पड़े। क्या करें? छुटकारा ही नहीं। वह तो कर्म भुगतने पर ही छुटकारा। जिस काल में, जिस क्षेत्र में, जिन द्रव्य-भाव, सभी के साथ होने पर जो भुगतना है, उसमें हमारा चलता ही नहीं। भागोगे तब भी कहाँ तक भागते रहोगे?

यह जो हमारे पास आसरा लेने आये होते हैं न, वे लोग आसरा लेने आये हैं और हमें देना है, दोनों एग्रीमेन्ट तो पूरे करने होंगे न? राग से नहीं, समय से। समय व्यतीत होना चाहिए। लेन देन चुकता कर डालिये। सब फाइलें ही हैं न?

फाइलों को 'मेरी, मेरी' करके छाती से लगाया, नहीं? इस पुस्तक को मैं 'मेरी' नहीं कहता वहाँ तक पुस्तक को अच्छा लगे। मेरी कहा कि पुस्तक को बुरा लगे, रूठ जाने पर आमादा हो जाये। सभी का ऐसा है ही न? 'मेरा' कहा कि चिपका, आ लिपटा। फिर भी 'मेरा' बोलने में हर्ज नहीं है। ड्रामेटिक 'मेरा' बोलना चाहें तो बोलिये। ड्रामा में बोलते ही हैं न? 'यह मेरा राज्य इतना बड़ा है, ऐसा है, वैसा है।' ऐसे सब नाटक ही करना है मगर सावधान रहकर।

पूर्णता प्राप्ति हेतु मौन धरें

जहाँ तक पूर्णाहुति नहीं होती, वहाँ तक बोलने की बात से (बाहर लोगों के साथ सत्संग करने से) दूर रहिये। उसमें पड़ने जैसा नहीं है। हाँ, हम किसी से इतना कह सकते हैं कि, 'वहाँ पर अच्छा सत्संग होता है, ऐसा है, वैसा है, वहाँ पर जाइये।' इतनी बातचीत कर सकते हैं। उपदेश नहीं दे सकते। यह उपदेश देने जैसी वस्तु नहीं है। यह 'अक्रम विज्ञान' है।

यह 'दादाजी' का ज्ञान जो पाया है, उस ज्ञान

से जो माल निकले न, उसे सुनकर तो जगत् सब कुछ अर्पण कर दे, और अर्पण करने पर क्या होता है? लालच में फँसा फिर! वे सारे जो (कषाय) उपशम हुए हैं न, वे जाग उठें फटाफट। यह आकर्षण करनेवाली वाणी है। यह ज्ञान आकर्षक है। इसलिये मौन रहना। यदि पूर्ण रूप से लाभान्वित होना चाहें तो मौन रहें। और यदि दुकान लगानी है तो बोलने की छूट है और दुकान चलनेवाली भी नहीं है। दुकान लगाओगे तो भी नहीं चलनेवाली, उठ जायेगी। क्योंकि 'अर्पित ज्ञान' है, इसलिये ऊड जाने में देर नहीं लगेगी। दुकान तो उस क्रमिक मार्ग में चलती हैं। दो अवतार, पाँच अवतार कि दस अवतार चले और फिर वह भी उठ जाये। दुकान लगाना मतलब सिद्धि बेचना। प्राप्त सिद्धि को बेचना शुरू किया, मतलब उसका दुरुपयोग किया।

गोशालक, महावीर भगवान का खास शिष्य था। गोशालक महावीर भगवान के पास लम्बे अरसे तक रहा। फिर उसे ऐसा लगा कि सारा ज्ञान मेरी समझ में आ गया है। इसलिये आखिर में वह विरोधी होकर खड़ा रहा। भगवान से अलग होकर कहने लगा कि, 'मैं तीर्थंकर हूँ, वे तीर्थंकर नहीं हैं।' और कभी-कभी ऐसा भी बोलता था कि, 'वे भी तीर्थंकर हैं और मैं भी तीर्थंकर हूँ।' अब यह रोग लगा, फिर क्या हालत हुई उसकी!

अब महावीर भगवान के पास था, फिर भी वहाँ पर सीधा नहीं रहा। तब हमारे पास जो बैठा हो वह कैसे सीधा रहेगा? यदि कच्चा कट जाये तो (अधूरी दशा में पूर्णता का बोध करने पर) क्या गत बनेगी? और वह तो चौथे आरे (सुषम काल) की बात थी। यह तो पाँचवा आरा (दुषम काल) अनंत अवतार खराब कर डाले।

अनादि से ऐसी ही मार खाते आये हैं न लोग? ऐसी ही मार बार-बार खाते रहते हैं। ज़रा-सा भी स्वाद आने लगा कि, चढ़ा ही है ऊपर (!)

जुदा रहकर चेतायें, प्रतिक्रमण कराये

प्रश्नकर्ता : तब फिर प्रतिक्रमण कौन करे?

दादाश्री : जो अतिक्रमण करता है, उसके पास ही प्रतिक्रमण करवाया जाता है।

प्रश्नकर्ता : यहाँ पर आप मुझे स्थूल रूप से बताइये न, कि यह शरीर प्रतिक्रमण करता है। मैं उस भाई से जाकर कहूँ कि, 'मैं ने आपको कल भला-बुरा कहा था, मुझे क्षमा करें।' यह प्रतिक्रमण शरीर ने जाकर कहा, इसलिये स्थूल वस्तु हुई, तो इसमें सूक्ष्म वस्तु क्या है?

दादाश्री : क्यों? प्रतिक्रमण करने का अंदर जो भाव हुआ वह सूक्ष्म है और यह जो बाहर हुआ वह स्थूल है। यह स्थूल नहीं हुआ होता तो भी चलता। मतलब सूक्ष्म करने पर बहुत हो गया। और जिसने अतिक्रमण किया उसके पास ही प्रतिक्रमण करवाना, कि भैया, तू कर। तू ने अतिक्रमण किया, इसलिये तू प्रतिक्रमण कर और शुद्ध हो जा। मतलब अतिक्रमणवाले (जिसने गुणन किया हो) के पास भाग करा देना कि 'भैया, अब ऐसा क्यों करता है? प्रतिक्रमण जैसा कोई रास्ता नहीं है।'

प्रश्नकर्ता : हमेशा 'शुद्धात्मा हूँ' ऐसा भान रहना चाहिए?

दादाश्री : 'शुद्ध ही है' यह भाव छूटता नहीं। और सामनेवाला हमें गालियाँ सुनाता हो और मार मारता हो पर वह 'शुद्ध ही है' ऐसा भाव नहीं छोड़ना चाहिए।

खुद शुद्ध ही है। चंदुभाई के हाथों कोई जीव मर गया, तब भी खुद की शुद्धता नहीं चूके, उसका नाम ज्ञान कहलाये। खुद को भ्रांति उत्पन्न नहीं होती कि यह मैं ने मारा, क्योंकि मारनेवाले हम हैं ही नहीं। हम शुद्ध स्वरूप हैं। हम कर्ता-भोक्ता हैं ही नहीं। जो कर्ता-भोक्ता है उसका यह गुनाह है। मतलब आप तो 'चंदुभाई क्या करते हैं' यह देखा करना। और

कोई जीव उसके हाथों मर जाये तो ज़रा सलाह देना कि, 'चंदुभाई, ज़रा सँभल के चलिये तो ठीक रहेगा।'

यदि सायन्टिफिक (वैज्ञानिक) रूप से ज्ञान रहता हो तो मौन रहेंगे तो भी हर्ज नहीं है, पर सायन्टिफिक रूप से हमारे लोगों को रहता नहीं है। इसलिये आपको कुछ ऐसा (चंदुभाई के साथ बातचीत का प्रयोग) बोलना चाहिए। क्योंकि वह जो बोलता है वह शुद्धात्मा नहीं बोलता, वह है तो, प्रज्ञा नामक शक्ति बोलती है। मतलब शुद्धात्मा को बोलना होता ही नहीं। इसलिये प्रज्ञा नामक शक्ति कहे कि, 'ऐसा क्यों करते हैं? ऐसा नहीं होना चाहिये।' इतना कहने पर काफी हो गया। अगर तो किसी को बुरा लगे ऐसा वर्तन होने पर प्रज्ञान नामक शक्ति चंदुभाई से कहे कि, 'आप प्रतिक्रमण कर डालिये, प्रत्याख्यान कीजिये।' बस इतना ही। इसमें कुछ कठीन है क्या?

प्रश्नकर्ता : नहीं, नहीं। बिलकुल आसान है।

दादाश्री : और यदि इस प्रकार प्रत्याख्यान नहीं हुआ होगा तो आगे दो अवतार और होंगे, इसलिए यहाँ (इस भव में) कर लेना अच्छा है। इसमें कुछ कठीन नहीं है।

बातचीत के प्रयोग से बोलें, वह जागृति, जुदापना से चेताये नहीं, वह मौन, वह प्रमाद !

भीतर अंतःकरण तन्मयाकार हो रहा है, उसे हमें 'जानना' पड़े और 'देखना' पड़े। भीतर अंतःकरण तन्मयाकार नहीं होने पर कोई काम ही नहीं होता। तन्मयाकार तो होना ही चाहिए न?

हम गाडी में यहाँ पर आने के लिये निकलें, तब अंदर सब तन्मयाकार ही होता है। पर हम उसे 'देखें' और 'जानें'। हम अलग रहकर काम करें। आप से इस हद तक सब काम नहीं हो पाये पर आपको लक्ष्य रहा करे कि, 'मैं शुद्धात्मा हूँ'। कोई बार लक्ष्य नहीं रहा तो प्रतीति रहा करे। बाकी, अंदर सब चलता ही रहे और हम उसे 'देखा' करें।

दादावाणी

प्रश्नकर्ता : विचार आने के बाद तन्मय हो जायें, चित्त फोटो दिखाये, यह तन्मयाकार दशा कहलाये न?

दादाश्री : पर वह तो डिस्चार्ज ही है न, उसमें हर्ज नहीं। उसे हमने 'जाना', तब से हम अलग और वह अलग। 'जाननेवाला' अलग ही होता है। 'करनेवाला' बखेड़ेवाला होता है, हम मुक्त के मुक्त है।

प्रश्नकर्ता : वह तो ऐसा ही रहता है कि यह सब चंदुभाई ही करते हैं। पहले उदय में तन्मयाकार हो जाते थे, उसके बजाय अब हम अपना उदय देखा करते हैं।

दादाश्री : उदय देखा करें।

प्रश्नकर्ता : अपने उदय को देखा करते हैं कि हमारा ऐसा उदय आया।

दादाश्री : अब सभी उदय को 'देखना', उसका नाम अक्रम (विज्ञान)।

प्रश्नकर्ता : हम 'देखना' चूकें तभी बुद्धि बखेड़ा करे न?

दादाश्री : हाँ, मगर चूकते हो, यह मैं 'देखता' हूँ न सब जगह? पर उसमें हर्ज नहीं। इसी कारण से हम केवलज्ञान में अटके हैं, और कुछ नहीं हैं। ये सारी सूक्ष्म वस्तुएँ ही केवलज्ञान को रोकती हैं।

प्रश्नकर्ता : उसमें दो बातें हुई, चंदुभाई की बुद्धि बखेड़ा करती हो तो वह बखेड़ा करे और मैं उसे 'जानूँ'।

दादाश्री : आपने 'जाना' मतलब आप मुक्त और चंदुभाई भी मुक्त। यदि आप 'जानें' तो दोनों मुक्त और नहीं 'जानते' तो दोनों बंधन में।

प्रश्नकर्ता : क्योंकि फिर बुद्धि के बखेड़े का कोई अर्थ नहीं रहा।

दादाश्री : कुछ भी अर्थ नहीं रहा। बुद्धि के अर्थ की यहाँ गिनती ही नहीं है। इसके उदयकर्म से यह उसे देता है और उसके उदयकर्म से वह लेता है। इसने उसके उदयकर्म से पाँच लाख रूपये उधार दिये और उसने अपने उदयकर्म से लिये। फिर उसमें बखेड़ा रहा ही कहाँ कोई? अब उसका वापस करने का उदयकर्म आने पर वह लौटायेगा और इसका लेने का उदयकर्म होने पर लेगा, वर्ना नहीं लेगा।

प्रश्नकर्ता : मतलब इसका बहीखाता नहीं लिखें तो भी चले क्या?

दादाश्री : बहीखाता लिखने की ज़रूरत ही कहाँ रहती है? यह सारी सूक्ष्म बातें तीर्थकर की ही हैं!

प्रश्नकर्ता : यह जो आपने बताया न कि, आप 'जानें' तो चंदुभाई भी मुक्त और आप भी मुक्त, वह दोनों मुक्त। यह समझ में नहीं आया।

दादाश्री : इसमें नहीं समझ में आये ऐसा क्या है? चंदुभाई मुक्त हुए मतलब 'खुद' मुक्त ही है। वह तो उदयकर्म के अधीन है। उदयकर्म के अधीन होने पर जिम्मेदारी नहीं होती।

प्रश्नकर्ता : वह उदयकर्म के अधीन है तो 'वह' कौन? उदयकर्म के जो अधीन है वह कौन?

दादाश्री : वह चंदुभाई है।

प्रश्नकर्ता : चंदुभाई उदयकर्म के अधीन और जाननेवाला 'खुद' है?

दादाश्री : हाँ, खुद या खुद की जो प्रज्ञाशक्ति है वही!

प्रश्नकर्ता : अब यदि जाननेवाला खुद हो तो प्रज्ञाशक्ति बखेड़ा नहीं करती न?

दादाश्री : अंदर में बखेड़ा तो चंदुभाई करे,

दादावाणी

उदयकर्म के अधीन होने पर। पर उसमें उसको यदि प्रज्ञाशक्ति की जागृति नहीं रही तो वह (जाननेवाला चंदुभाई के) साथ हो गया। जागृति नहीं होती उस घड़ी बखेड़ा उसमें हो जाये।

प्रश्नकर्ता : प्रज्ञा साथ हो जाये?

दादाश्री : नहीं, प्रज्ञा साथ नहीं होती। प्रज्ञा तो अपना काम करती रहे पर जागृति नहीं होने पर बखेड़ा हो जाये। हमें पता भी नहीं चले कि यह बखेड़ा हो गया।

प्रश्नकर्ता : प्रज्ञा यदि जागृति में नहीं होती, तो चंदुभाई के साथ तन्मय कौन हो जाता है? चंदुभाई के बखेड़े के साथ कौन तन्मय हो जाता है?

दादाश्री : अजागृति। मतलब बोलना नहीं, मौन रहना इसका नाम बखेड़ा। देखा-जाना नहीं उसका नाम मौन रहा। अजागृति उसका नाम बखेड़ा। और कौन साथ होनेवाला है? उसे फिर मिठास भी बरतती है, मतलब उसके नाम के साथ जुड़ गया कहलाये न?

प्रश्नकर्ता : मिठास किसे बरतती है?

दादाश्री : यह जो उसका डिस्चार्ज अहंकार है न, उसे अब वहाँ यदि 'देखनेवाला' होता तो दोनों अलग हो जाते। वर्ना हिसाब बाकी रहा, जो अगले अवतार के लिये शेष रहा। तीर्थकर निःशेष होते हैं और इनका शेष रहा। मतलब फिर से भाग करना पड़ेगा, शेष नहीं रहे ऐसा चाहिए!

प्रश्नकर्ता : उदयकर्म और चंदुभाई वे दोनों अलग हैं? क्योंकि आपने कहा न कि चंदुभाई उदयकर्म में बखेड़ा करे मगर 'हम' उसमें शामिल नहीं होते।

दादाश्री : चंदुभाई तो बखेड़ा करे। उदयकर्म में बखेड़ा करवाने का अज्ञानता का स्वभाव ही है। चंदुभाई माने अज्ञानता। और उसका स्वभाव ही है। बखेड़ा करने का। पर उसे यदि हम 'जानें' तो दोनों

मुक्त। जानें नहीं मतलब मौन रहें, और मौन रहें यानी उसमें हस्ताक्षर हो गये।

प्रश्नकर्ता : हम एकात्म होकर उसमें तन्मय हुए और मौन, मतलब तो फिर उसमें एक हुए ऐसा?

दादाश्री : अरे, औरों को धमकाते हैं, तब भी मालूम नहीं होता कि मैं यह गलत कर रहा हूँ। बोलिये अब, कैसे-कैसे बड़े उदयकर्म आकर जाते रहते होंगे?

प्रश्नकर्ता : उदयकर्म में जब बखेड़ा होता हो उस घड़ी मौन रहें मतलब हस्ताक्षर कर दिये। वह मौन रहना वहाँ पर नहीं होना चाहिए, ऐसा?

दादाश्री : उदयकर्म में ज्यों का त्यों होने दो न। कुछ करने को तो रहा नहीं। अब 'जानना' ही रहा है। मौन माने क्या? उदयकर्म आमने-सामने लड़े उसमें आपने 'देखा' नहीं मतलब मौन रहे। उपयोग नहीं दिया मतलब प्रमाद में गया, वह मौन। प्रमाद वह मौन। हमारे अगले अवतार के लिये शेष राशि भी चाहिए न? सब कुछ भुना लें ऐसा कहीं चलता है?

प्रश्नकर्ता : और वह मौन नहीं होता तो कैसा होता है?

दादाश्री : दोनों मुक्त हो जाये। चंदुभाई उस के साथ बखेड़ा करते थे, इसे हमने 'देखा' और 'जाना' मतलब हम भी मुक्त और चंदुभाई भी मुक्त। चंदुभाई को फिर से कर्म का कोई कारण नहीं रहा और हमें भी नहीं रहा।

प्रश्नकर्ता : मौन नहीं होने पर क्या होता है? जिसे आप जागृति कहते हैं, उसका विरोधी शब्द क्या है?

दादाश्री : अजागृति। अजागृति को मौन कहते हैं हम। जागृति नहीं रहे उसका नाम प्रमाद। जागृति यानी अप्रमत्त।

जय सच्चिदानंद।

दादावाणी

पूज्य दीपकभाई देसाई के सांनिध्य में होनेवाले सत्संग कार्यक्रम

नैरोबी (केन्या)

२२ से २४ फरवरी, रात्रि ८ से १० - सत्संग तथा २५ फरवरी (रवि), दोपहर ३-३० से ७ - 'ज्ञानविधि'
स्थल : विसा ओशवाल सेन्टर आडिटोरियम, रिंग रोड, नकुमत उकाय के सामने, नैरोबी.

फोन : +254 726 277 708, +254 733 585 401, email: appin92@yahoo.co.uk

नकुरु (केन्या)

१ से ३ मार्च, रात्रि ८ से १०-३० - सत्संग तथा ४ मार्च (रवि), शाम ४ से ७ - 'ज्ञानविधि'

स्थल : विसा ओशवाल कम्युनिटी होल, नकुरु. फोन : +254 734 596 546, +254 722 840 123

९ से ११ मार्च, सुबह १० से १ तथा शाम ४ से ७- सत्संग शिविर

स्थल : सोलाइ फार्म, नकुरु टाउन के पास. email: maldekundan@gmail.com

दुबई (यु.ए.ई.)

१३ से १५ तथा १७ मार्च, रात ८ से १० - सत्संग तथा १६ मार्च (शुक्र), शाम ६ से ९ - 'ज्ञानविधि'

स्थल : सिंधी सेरेमोनियल होल, ओफ कोसमोस लेन, टीपटोप के पीछे, मीना बाजार, बर दुबई.

फोन : +971 50 675 4832, email: dhirenmsah@hotmail.com

पूज्य नीरूमाँ की प्रथम पुण्यतिथि के अवसर पर अडालज त्रिमंदिर पर विशेष कार्यक्रम

दि. १८ मार्च २००७ को सुबह ६ बजे से २४ घंटे की अखंड स्वरूप कीर्तन भक्ति शुरू होगी, जो दि. १९ मार्च को सुबह ६ बजे समाप्त होगी। उसके बाद पूज्य नीरूमाँ के समाधिस्थल पर सुबह ८ बजे कार्यक्रम रहेगा। सुबह १० बजे 'निरांत' का उद्घाटन होगा। शाम ४-३० से ६ सत्संग-भक्ति तथा रात ८ से १० - पूज्य नीरूमाँ के दिव्य जीवनप्रसंगों की अनुपम झांखी दर्शाता हुआ विशेष कार्यक्रम होगा।

पूज्य दीपकभाई के सांनिध्य में 'ज्ञानविधि'

२५ मार्च दोपहर ३-३० से ७ - आत्मसाक्षात्कार पाने के लिये भेदज्ञान का प्रयोग - त्रिमंदिर अडालज में.

पूज्य नीरूमाँ को देखिये टी.वी. चैनल्स पर...

भारत □ फिर से शुरू - 'Zee गुजराती' पर हररोज सुबह ७ से ७-३० (गुजराती में)

□ 'दूरदर्शन' (नेशनल) पर सुबह ८-३० से ९ (सोम से शुक्र) 'नई दृष्टि, नई राह'

इसी समय देखिए, तमिलनाडु में तमिल भाषा में... तथा केरल में मलयालम भाषा में...

□ 'दूरदर्शन' डीडी-१ प्रतिदिन दोपहर ३-३० से ४ (गुजराती में) (अन्य राज्यों में डीडी ११ पर वही समय)

□ □ 'आस्था इन्टरनेशनल' प्रतिदिन दोपहर १ से १-३० - गुजराती में (समय में परिवर्तन)

U.S.A. : □ □ 'TV Asia' Everyday 7 to 7-30 AM EST (In Gujarati)

□ □ 'TV 39 (NJ)' Mon-Fri 6 to 7 PM & Sat 6 PM to 6-30 PM (In Gujarati)

Canada: □ □ 'ATN' Every Wed-Thu 8.30 to 9.00 AM EST

□ □ समग्र विश्व में (भारत के अलावा) सोनी टीवी पर (सोम से शुक्र) सुबह ७ से ७-३०, (हिन्दी में)

□ □ समग्र विश्व में (भारत के अलावा) 'आस्था इन्टरनेशनल' पर (सोम से शुक्र) सुबह ७-३० से ८

पूज्य दीपकभाई को देखिये टी.वी. चैनल्स पर...

भारत □ 'दूरदर्शन' डीडी-११ पर प्रतिदिन रात्रि ९ से ९-३० - 'ज्ञानप्रकाश' (गुजराती में)

□ 'आस्था इन्टरनेशनल' पर (सोम से शुक्र) रात्रि १२ से १२-३०, (शनि-रवि) दोपहर २ से २-३०

समग्र विश्व में (भारत के अलावा) 'आस्था इन्टरनेशनल' पर (सोम से शुक्र) शाम ६-३० से ७, शनि-रवि सुबह ८-३० से ९